मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

जनवरी–मार्च, 2019

RNI Reference No : 1322876 • Title Code : MPHIN34795 • Year : 3 • Edition : 10

MADHYA PRADESH VANANCHAL SANDESH

January-March, 2019

सीडबॉल निर्माण–एक नवाचार

सचिन शर्मा

ईको टूरिज्म् कैंप, रनेंहफॉल, जिला– पन्ना

Patron :

J.K. Mohanty
Principal Chief Conservator of Forests
(HOFF), Satpura Bhawan, Bhopal

Editorial Board :

S.K. Mandal
Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lok Vaniki)

Dr. Abhay Kumar Patil
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Complaints and Redressal)

Alok Kumar
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Wildlife)

Pushkar Singh
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Development)

Sameeta Rajora
Chief Conservator of Forests
Director Van Vihar

S.P. Jain
DCF

B.K. Dhar
Prachar Adhikari

Editor :

Dr. P.C. Dubey
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lok Vaniki)

Prachar Prasar Prakosth Team :

Neeraj Gautam, Research Coordinator
Diwakar Pandit, Extension Coordinator

Contact :

Prachar Prasar Prakosth, Room No. 140,
Satpura Bhawan, Bhopal
Email : dcfpracharprasar@mp.gov.in
Contact : 07552524293

Owner & Publisher :

Prachar Prasar Prakosth (M.P.F.D.)
Printed by Madhya Pradesh Madhyam, Bhopal

The views expressed in various articles belong to the authors of the article. Madhya Pradesh Forest Department may not agree with the views expressed by authors and will not be responsible for the correctness of the article. Madhya Pradesh Forest Department is not responsible for any liability arising out of context/text of the article published in this magazine.

No part of this magazine can be reproduced and published without the consent of the publisher of Madhya Pradesh Vananchal Sandesh. All legal disputes will come under the jurisdiction of Bhopal, Madhya Pradesh.

Published by :- APCCF (R/E) on behalf of MP Forest Department.
Printed by :- Super Printers & Plastics Works on behalf of Madhya Pradesh Madhyam.
Printed at :- Super Printers & Plastics Works, Plot No. 22 Nadeem House, Press Complex Zone 1 MP Nagar, Bhopal.
Published at Room No. 140, Prachar Prasar Prakosth, Satpura Bhawan, Bhopal, M.P.
Email :- pracharprasarprakosth@mp.gov.in, Contact No. 0755-2524293, Editor :- Dr. P.C. Dubey, APCCF (R/E)

इस बार के अंक में

- अर्धकुम्भ-2019 प्रयागराज में मध्यप्रदेश शासन वन विभाग की प्रदर्शनी 01-06
- सीडबॉल निर्माण 07-09
- कोडियम (आंध्र प्रदेश) में स्थित निजी नर्सरी का भ्रमण 10-11
- बांस से निर्मित क्राफ्ट, होशंगाबाद 12-13

- "World Pangolin Day" celebration by MPTFS 14-15
- बाघिन SD-011 को पुन: जंगली बनाने (Rewilding) की कहानी 16
- Capture and Release of Betul Tiger in Satpura Tiger Reserve 17-18

- वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में फायर प्रोटेक्शन कार्य 19
- वन विहार में ग्रास मिडो विकास 20
- (वन्यप्राणी पर्यावास का समन्वित विकास) हेबीटेट मैनेजमेंट 21

- (वन्यप्राणी पर्यावास का समन्वित विकास) मेंटिनेंस ऑफ वॉटर रिर्सोसेस 22
- ''ई-चरक'' और औषधीय पौधों के लिए स्वैच्छिक प्रमाणन योजना 23-24

- राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में चलित मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का क्षेत्रीय स्तर पर मृदा परीक्षण 25
- राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा देवास वनमण्डल में लोक वानिकी प्रबंध योजना का क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन 26
- राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में स्थापित क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र 27

- राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा लाख की खेती पर महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 28
- राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में तेलंगाना राज्य वन अकादमी, इदुलापल्ली, हैदराबाद से प्रशिक्षु वन क्षेत्रपालों के संस्थान में शैक्षणिक भ्रमण 29

- आँवले पर लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनकी रोकथाम 30-31
- जैवसंसाधनों तक पहुंच एवं लाभ का प्रभाजन (Aceess and Benefit Sharing) 32-33
- जैवविविधता शिक्षा एवं जागरुकता 34
- जैवविविधता संरक्षण अभियान के पुनरावलोकन कार्यक्रम 35-37

1. आंतरिक तकनीकी विशेषज्ञ समिति (ITEC) की द्वितीय बैठक

2. मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्य योजना (2018–30) की अंतिम कार्यशाला

- ''राज्य स्तरीय मोगली बाल उत्सव'' 2018 38-40
- मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड की 15वीं बोर्ड बैठक 41
- गणतंत्र दिवस पर पारितोषिक वितरण 42

- भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति (जनवरी-मार्च) 43
- भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृति (जनवरी-मार्च) 43

- अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 44
- हरित सन्देश 45

तपोवन में डवलप हो रहा इंको पर्यटन सेंटर, तैयार की जा रही 80 हजार सेड बॉल्स

टूरिस्ट के लिए साइकिल ट्रैक तैयार, नेचर ट्रैकिंग से ले सकेंगे वाइल्डलाइफ का मजा

अब जंगल भी दिखेंगे हरे भरे

बच्चों के लिए तैयार गार्डन, लगाए झूले

ये नजर आएंगे

तैयार हुआ पॉली हाउस और ग्रीन हाउस

- अखबारों के आइनों से 46-47

पी. शिवाप्रसाद

संपादकीय

वनांचल सन्देश के इस अंक में प्रकाशित विभिन्न विभागीय गतिविधियों, के साथ–साथ सीडबॉल के माध्यम से बृहत स्तर पर रोपण का एक अभिनव प्रयास दर्शाया गया है।

विभाग द्वारा प्रयागराज कुम्भ के अवसर पर विभागीय गतिविधियों को दर्शाये जाने हेतु एक प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रकार का प्रथम प्रयास कुम्भ के अवसर पर प्रदेश से बाहर जाकर किया गया।

वनांचल सन्देश प्रकाशन की दो वर्ष की छोटी सी यात्रा में विभाग की विभिन्न गतिविधियों के प्रकाशन हेतु कई प्रयास किये गए, जिससे यह पत्रिका उत्तरोत्तर विभाग की गतिविधियों को विभाग एवं विभाग के बाहर अपनी पहचान बना पाई है। विभाग का प्रयास आगे भी रहेगा कि वन, वनवासी, पर्यावरण, मौसम परिवर्तन एवं वन के अटूट सम्बन्ध को और अधिक वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया जा सके।

इन्ही शुभकामनाओं के साथ...

डॉ. पी.सी दुबे

Dear Sun.
Please Go To Setting>
Display>Brightness!
And Reduce It... Tooo Hot
To Handle!!

I Have Not Changed Any Settings...
Please Go To Your Settings And...
(1) Increase Number Of Trees
(2) Reduce Carbon Emissions Levels
(3) Reducs Concrete Jungles
(4) Increase Number Of Lakes...
Basically Switch To Human Mode
From Auto Mode...

अर्धकुम्भ –2019 प्रयागराज में
मध्यप्रदेश शासन वन विभाग की प्रदर्शनी

उत्तरप्रदेश के प्रयागराज में प्रत्येक बारहवें वर्ष में कुम्भ तथा प्रत्येक दो पूर्ण कुम्भ के मध्य में छटवें वर्ष में अर्धकुम्भ मेले का पर्व आता है। इस वर्ष यह अर्धकुम्भ प्रयागराज नगरी में 14 जनवरी 2019 से 4 मार्च 2019 तक आयोजित हुआ था, जिसमे उत्तरप्रदेश सरकार ने मेले का आयोजन भी किया था। इस अवसर पर मध्यप्रदेश वन विभाग द्वारा मेले में प्रदर्शनी लगाकर मध्यप्रदेश में वन विभाग की चल रही विभिन्न योजनाओं/गतिविधियों की प्रदर्शनी के माध्यम से मेले में आने वाले व्यक्तियों को अवगत कराया गया।

प्रदर्शनी में मध्यप्रदेश शासन वन विभाग की गतिवधियों को मॉडल, वन उत्पादों, फ्लेक्सी बोर्ड के माध्यम से योजनाओं का प्रदर्शन किया गया।

सफ़ेद बाघ मॉडल, व्हाईट टाइगर सफारी एवं चिड़ियाघर मुकुंदपुर मॉडल, ईको टूरिज्म मॉडल, अनुसन्धान एवं विस्तार रोपणी मॉडल–इस मॉडल में आदर्श रोपणी के अंदर म.प्र. वन विभाग अनुसन्धान एवं विस्तार शाखा द्वारा संचालित गतिविधियों, जैसे ग्रीन हाउस, पाली हाउस, नर्सरी टूरिज्म, फौगार सिस्टम, नीम कोटेड यूरिया निर्माण, वर्मी कम्पोस्ट खाद्य निर्माण, सीड वाल निर्माण एवं विभिन्न प्रकार के बीजों को प्रदर्शित कर उनकी जानकारी आम जनता तक कराई गयी एवं नक्षत्र वन मॉडल आदि प्रदर्शित किये गये।

प्रदर्शनी में रखे गए मॉडल विशेष रूप से बच्चों एवं युवा वर्ग के लिए एक आकर्षण का केंद्र रहे हैं।

वन उत्पादों का सीधा प्रदर्शन तथा सोवेनियर – इस खंड में मुख्यत: वन उत्पाद जैसे विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियां, बांस हस्तशिल्प से निर्मित ज्वेलरी, अगरबत्ती काड़ी, राष्ट्रीय उद्यानों के टी–शर्ट, जैकेट कैप लेवल पिन वन्यजीवों पर आधारित किताबें आदि उत्पादों को विक्रय हेतु भी रखा गया। इस खंड में विंध्य हर्बल द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक दवाओं को प्रदर्शित करते हुए विक्रय हेतु उपलब्ध कराया गया था। साथ में इनके उपयोग के उचित परामर्श हेतु एक आयुर्वेदिक चिकित्सक भी उपलब्ध थे।

जे.के. मोहंती (पी.सी.सी.एफ., हॉफ) द्वारा प्रयागराज में प्रदर्शनी अवलोकन

मध्यप्रदेश वन विभाग की विभिन्न शाखाओं के साथ उनके सहयोगी बोर्ड एवं संघों द्वारा संचालित योजनाओं का चित्रण भी फ्लेक्सी के माध्यम से प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया। इसके अतिरिक्त म.प्र. शासन वन विभाग की अन्य सहयोगी संस्थाओं म.प्र. राज्य लघुवनोपज संघ, म.प्र. राज्य जैव विविधता बोर्ड म.प्र. ईको पर्यटन बोर्ड, म.प्र. राज्य बांस मिशन, म.प्र. टाइगर फॉउण्डेशन सोसाइटी, म.प्र. राज्य वन विकास निगम की योजनाएं भी प्रदर्शित की गयी।

प्रदर्शनी – प्रदर्शनी में वन विभाग के विभिन्न उत्पादों की कुल बिक्री 127715/– रुपयों की हुयी। यहाँ यह स्पष्ट करना उचित होगा की प्रदर्शनी का उद्देश्य सामग्री बेचना न होकर उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें बढ़ावा देना था। बिक्री से यह स्पष्ट होता है कि म.प्र. वन विभाग के विभिन्न उत्पादों को आगन्तुकों द्वारा पसंद किया गया, जिससे प्रदर्शनी के मुख्य उदेश्य की पूर्ती हुई है। प्रदर्शनी के 25 दिवसों की अवधि में लगभग 18 हजार व्यक्तियों ने जहां विभाग की योजनाओं का लाभ उठाया, वहीं दूसरी ओर इनमें से 2093 व्यक्तियों द्वारा आगंतुक पुस्तिका में अपने महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए। प्रदर्शनी को अपर मुख्य सचिव वन, वन बल प्रमुख, प्रधान मुख्य वन संरक्षक कैम्पा के साथ–साथ उत्तरप्रदेश शासन वन विभाग एवं अन्य प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा भी अवलोकन किया गया तथा प्रदर्शनी को सराहा गया। उत्तरप्रदेश तथा मध्यप्रदेश के मीडिया द्वारा भी म.प्र. वन विभाग की प्रदर्शनी को कवरेज दिया गया।

वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा रोपणी अवलोकन

जे.के. मोहंती (पी.सी.सी.एफ., हॉफ) अहमदपुर रोपणी

जे.के. मोहंती (पी.सी.सी.एफ., हॉफ) का रीवा दौरा

एस.के. मण्डल (प्रधान मुख्य वनसंरक्षक, अनुसन्धान विस्तार एवं लोकवानिकी) का जबलपुर दौरा

जे.के. मोहंती (पी.सी.सी.एफ., हॉफ) का जबलपुर दौरा

एस.के. मण्डल (प्रधान मुख्य वनसंरक्षक, अनुसन्धान विस्तार एवं लोक वानिकी) का रीवा दौरा

एस.के. मण्डल (प्रधान मुख्य वनसंरक्षक, अनुसन्धान विस्तार एवं लोक वानिकी) का इंदौर दौरा

प्रशिक्षण एवं कार्यशाला आयोजन

सीड बॉल ट्रेनिंग, खंडवा वृत्त

जीवामृत ट्रेनिंग, सागर वृत्त

मृदा परीक्षण एवं विश्लेषण, रतलाम वृत्त

ट्रेनिंग, ग्वालियर वृत्त

वर्मी कम्पोस्ट ट्रेनिंग, भोपाल वृत्त

सीड बॉल ट्रेनिंग, खरगोन वृत्त

रोपणी अधोसंरचना

पॉली हाउस कटरा रोपणी, जबलपुर वृत्त

माइक्रो फोग्गर, उज्जैन वृत्त

वर्मी कम्पोस्ट इकाई, उज्जैन वृत्त

माइक्रो फोग्गर, सागर वृत्त

सोलर पैनल, भोपाल वृत्त

छात्रों द्वारा भ्रमण, ग्वालियर वृत्त

रोपणी पर्यटन एवं नवाचार

ग्वालियर वृत्त

रोपणी पर्यटन, रीवा वृत्त

इंदौर वृत्त

रीवा वृत्त

स्वास्थ्य प्रशिक्षण शिविर, इंदौर वृत्त

ग्वालियर वृत्त

सीडबॉल निर्माण

इस वर्ष मुख्यालय स्तर पर निर्णय लिया गया है कि वन क्षेत्र में जिसका चयन क्षेत्रीय वन अधिकारीयों द्वारा किया जायेगा। वहाँ पर सीडबॉल के माध्यम से पुनरउत्पादन कार्य को बढ़ावा दिया जायेगा। निर्देशानुसार अपने स्तर से क्षेत्रीय अधिकारियों से चर्चा कर किन स्थलों पर सीडबॉल द्वारा बीजारोपण किया जायेगा, क्षेत्र के अनुरूप बीजों का एकत्रीकरण स्थानीय स्तर पर किया जायेगा। इस प्रकार सीडबॉल रोपणियों में तैयार किया जायेगा। क्षेत्रीय मांग कितनी होगी इसका आकलन स्थानीय स्तर पर किया जायेगा। सीडबॉल के निर्माण एवं सीडबॉल के क्षेत्र में वितरण किये जाने हेतु स्थानीय स्तर पर जनभागीदारी को प्रोत्साहित किया जायेगा। स्थानीय संस्थाओं, स्कूल के बच्चों को, एन.सी.सी., एन.एस.एस., स्काउट एन्ड गाइड को भी सीडबॉल बनाने के कार्य में सहयोग लिया जायेगा। जिससे बीजों की प्रजातियों के विषय में जानकारी विद्यार्थियों को दी जा सके।

पूर्व में छोटे स्तर पर वन विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा इस प्रकार के कार्य किये गए हैं, जिसके सकारात्मक परिणाम परिलक्षित हुए हैं। इस वर्ष इस कार्य को व्यवस्थित ढंग से बड़े स्तर पर सम्पादित किये जाने की योजना है। इस योजना के तहत प्रत्येक अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त को 1–1 लाख रुपए कुल 11 लाख रुपए प्रदान किये गए हैं। अभी तक कुल 10 लाख सीडबॉल का निर्माण किया जा चुका है।

रोपणियों में सीडबॉल बनाने हेतु अच्छी मिट्टी 3 भाग एवं एक भाग वर्मी कम्पोस्ट का उपयोग करना चाहिए। सीडबॉल का आकार एक इंच व्यास के आसपास का रखा जा सकता है। सीडबॉल में एक प्रजाति या 4–5 प्रजातियों के बीजों को मिलाकर बनाया जा सकता है। एक सीडबॉल में 5–6 बीज तक रखे जा सकते हैं। बीज की संख्या, बीज के आकार पर निर्भर करती है। जैसे हर्रा, बहेड़ा, कुसुम, करंज, जामुन, नीम, इमली हेतु 2–3 बीज पर्याप्त होते हैं।

मिट्टी तथा खाद को हल्के पानी से गीला करना है तथा उन्हें दोनों हाथों से गोलाकार बनाया जाता है। शीडबाल बनाने के पश्चात हल्की छाया में उन्हें 2–3 दिन तक सुखाने की आवश्यकता होती है, जिससे की बीजों का अंकुरण ना हो पाये। इस बात का ध्यान रखा जाता है कि

जे.के. मोहंती (पी.सी.सी.एफ.,हॉफ)
सीडबॉल निर्माण, भोपाल वृत्त

स्कूली बच्चो द्वारा सीड बॉल निर्माण, खंडवा वृत्त

कॉलेज के छात्रों द्वारा सीड बॉल निर्माण, जबलपुर वृत्त

सीडबॉल निर्माण कार्य, सागर वृत्त

छात्रों द्वारा सीडबॉल निर्माण, सिवनी वृत्त

विद्यार्थियों द्वारा सीडबॉल निर्माण, इन्दौर वृत्त

इसे बनाते समय इसमें नमी ज्यादा न रहे। 1 किग्रा मिश्रण में 10–20 ग्राम नीम खली भी मिलाई जा सकती है तथा बीजों को बीजामृत/जीवामृत से भी उपचार कर सुखाकर सीडबॉल में प्रयोग किया जा सकता है।

सीमेंट–कांक्रीट मिक्चर मशीन में खाद, मिट्टी, बीज एवं आवश्यक मात्रा में पानी मिलाकर भी सीडबॉल तैयार कर सकते हैं। इससे कम समय में ज्यादा शीड बॉल तैयार कर सकते हैं। जो बीज जून–जुलाई में आते हैं जैसे–नीम, महुआ, जामुन आदि उनसे उसी समय सीडबॉल बनाया जाना चाहिए। सीडबॉल में निम्न प्रजातियों को प्राथमिकता दी जाती है, जैसे:– सिरस, शीशम, अंजन, कुसुम, करंज, चिरोल, हर्रा, बहेड़ा, अचार, जंगल जलेबी, गुग्गल, स्थानीय चारा योग्य घास प्रजातियाँ, तिन्सा, खैर, तेन्दू, इमली महुआ, बाँस, सागौन आदि। प्रजातियों के चयन में स्थानीय मृदा जहाँ सीडबॉल रोपित किया जाना है, के प्रकार को विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है। इस पुरे गतिविधि में बीजों का क्रय बाजार से न करते हुए स्थानीय स्तर पर वन समिति के माध्यम या स्थानीय लोगों की भागीदारी से एकत्रित किया जायेगा। इस प्रकार जन भागीदारी को प्रोत्साहित किया जा सकेगा एवं उनका सहयोग भी लिया जा सकेगा।

छात्रों द्वारा सीडबॉल निर्माण, रतलाम वृत्त

सीडबॉल निर्माण, रीवा वृत्त

ड्राई सीडबॉल, ग्वालियर वृत्त

सीडबॉल निर्माण मशीन द्वारा,
भोपाल वृत्त

कोडियम (आंध्र प्रदेश) में स्थित निजी नर्सरी का भ्रमण

25 एवं 26.2.2019 को अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त इंदौर से श्री अशोक अवस्थी सहायक वन संरक्षक (स.व.स.), खण्डवा से श्री राम किशन सोलकी (स.व.स.), रतलाम से श्री जी.एस. सिसोदिया (स.व.स.) और भोपाल से श्री संजय पाठक (स.व.स.) के दल ने आध्रंप्रदेश स्थित कोडियम ग्राम की निजी रोपणियों का निरीक्षण किया।

इस क्षेत्र में बहुत बड़े पैमाने पर निजी रोपणी धारकों द्वारा कई प्रजातियों के पौधे तैयार किये जा रहे हैं। तथा कई प्रदेशों में इन्हें भेजा जाता हैं।

यह क्षेत्र गोदावरी नदी के आस-पास स्थित होने से यहाँ वर्ष भर पानी की कमी नहीं होती है। साथ ही यहाँ की मिट्टी दोमट रेतीली होने से पौधों की बढ़त स्वाभाविक रूप से अच्छी होती है।

रोपणी तकनीकी में मुख्यत: दो तीन तरीके पाये गये। पॉली बैग में भरे जाने वाले मिश्रण में कोकोपीट की मात्रा 50% तक पाई गई, वहीं समय-समय पर पौधों की ग्रेडिंग के दौरान स्पेसिंग का कार्य भी किया जाता है। सामान्यत: इनके द्वारा स्थानीय लाल मिट्टी के साथ काली मिट्टी

तथा वर्मी कम्पोस्ट का मिश्रण उपयोग किया जाता है।

रोपणी प्रबंधन में पाया गया कि पौधे बड़े होने के साथ ही उन्हे बड़ी से बड़ी पॉली बैग में लगातार स्थानान्तरण करते रहते हैं। इनके द्वारा पानी के जहाज से चीन तथा अन्य देशों से भी बड़े वृक्ष बुलवाये जाते हैं। चूकि इन रोपणियों में पौधा उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जा रहा है, अत: इनमें निर्मित पॉली हाऊस में सैकड़ों वर्गमीटर के क्षेत्र में बनाये गये हैं। रोपणियों का औसत क्षेत्रफल 300 एकड़ तक पाया गया है। पौधा तैयारी में हारमोन्स तथा उर्वरकों का भी उपयोग किया जा रहा है।

जन सामान्य ऑनलाइन प्राप्त कर सकेंगे रोपणियों में उपलब्ध पौधे

अनुसन्धान विस्तार की रोपणियों में उपलब्ध पौधों की जानकारी मध्यप्रदेश फॉरेस्ट डिपार्टमेंट की वेबसाइट पर उपलब्ध है, अब जनसामान्य रोपणीय स्तर तक वर्तमान में उपलब्ध पौधों की जानकारी सीधे ही ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं। इसे निम्न चित्रानुसार प्राप्त किया जा सकता है।

बांस से निर्मित क्राफ्ट, होशंगाबाद (वन वृत्त)

बांस किसान की लाठी और किसानों के काष्ठ के रूप में जाना जाता है। सदियों से बांस किसानों के लिये सबसे अधिक उपयोगी रहा है, परंतु फिर भी बांस किसानों की सतत् आमदनी का जरिया नहीं बन पाया है। बांस किसानों के लिये हरा सोना साबित हो सकता है और इसे किसानों की आय का मुख्य स्रोत बनाया जा सकता है। प्रदेश तथा देश में अनेक ऐसे किसान हैं, जिनके लिये बांस आमदनी का मुख्य जरिया है। केरल वन अनुसंधान संस्थान की एक रिपोर्ट के अनुसार तमिलनाडु प्रदेश के अनेक किसानों ने अपनी परंपरागत खेती छोड़कर बांस की खेती को अपनाया है।

बांस किसान के लिये सतत् रोजगार का जरिया बन सकता है, यदि किसान अपने खेतों पर बांस रोपण कर उनका वैज्ञानिक प्रबंधन करें। बांस उत्पादन के उपरांत उनका विपणन एवं बाजार एक प्रमुख आवश्यकता है। किसानों को एक ऐसा बाजार उपलब्ध हो जहां वे अपनी आवश्यकता से अधिक अतिरिक्त बांसों की बिक्री कर सकें।

किसानों को उनके खेतों में उत्पादित बांस के विपणन एवं बाजार उपलब्ध कराने हेतु एक प्रयास होशंगाबाद वन वृत्त के हरदा वनमंडल में किया गया है। हरदा वनमंडल के अन्तर्गत टिमरनी में वर्ष 2017 में म.प्र. राज्य बांस मिशन के सहयोग से 0.5 हैक्टेयर क्षेत्र में सामान्य सुविधा केन्द्र (Common Facility Center) की स्थापना की गई हैं। जिसका उद्देश्य किसानों के उत्पादित बांस को बाजार उपलब्ध कराना, बांस कामगारों को रोज़गार प्रदाय करना एवं बांस आधारित उत्तम गुणवत्ता के उत्पादों का निर्माण एवं व्यापार करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु वंशी एम्पोरियम की भी स्थापना की गई है। इस केन्द्र में बांस के कलात्मक उत्पादन, फर्नीचर एवं प्रसंस्कृत बांस के फैंसिंग पोल्स का निर्माण किया जाता है।

सामान्य सुविधा केन्द्र में बांस ट्रीटमेंट प्लांट की स्थापना की गई है। इसमें बांस के प्रसंस्करण उपरांत विभिन्न मशीनों की सहायता से बांस के फर्नीचर्स, कलात्मक उत्पाद एवं फेंसिंग हेतु बांस पोल्स का निर्माण किया जाता है। सामान्य सुविधा केन्द्र में इन उत्पादों के निर्माण हेतु निम्नानुसार मशीनें स्थापित की गई हैं :–

1. लेथ मशीन – इस मशीन का उपयोग बांस पर विभिन्न कलाकृति उकेरने एवं बांस को विभिन्न आकार में परिवर्तित किये जाने हेतु किया जाता है।

2. पैरेलल स्पलिटर – इस मशीन का उपयोग बांस की चिप तैयार करने के लिये किया जाता है।

3. फोर साईड प्लेनर – इस मशीन का उपयोग बांस की चिप को प्लेन करने में किया जाता है।

4. नाट रिमूवर – इस मशीन का उपयोग बांस की गठान साफ करने के लिये किया जाता है।

5. बैम्बू ट्रीटमेंट प्लांट – इसमें केमिकल (कापर सल्फेट, बोरिक एसिड तथा सोडियम बाई क्रोमेट) की सहायता से बांस की गुणवत्ता बढ़ाने के लिये बांस ट्रीटमेंट किया जाता है।

उपरोक्त मशीनों के अतिरिक्त क्रॉसकट मशीन, सेन्टर मशीन, ड्रिल मशीन एवं अन्य छोटे टूल्स भी केन्द्र में प्रदाय किये गये हैं।

उपरोक्त मशीनों का उपयोग कर सामान्य सुविधा केन्द्र के द्वारा बांस से विभिन्न सामग्रियाँ जैसे कुर्सी, टेबल, टेबल लैम्प एवं अन्य विभिन्न प्रकार के शो पीस का निर्माण किया जाता है। यहां के उत्पादन भोपाल, इन्दौर एवं आस–पास लगने वाले विभिन्न मेलों में आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग 59 ए पर हरदा जिले के टिमरनी नगर में ही बांस उत्पादों के विक्रय हेतु एक शो–रूम भी स्थापित किया गया है। जो इस मार्ग से गुजरने वाले यात्रियों के लिये

आकर्षण का केन्द्र है। इन उत्पादों की बिक्री से अद्यतन राशि रू. 254965/- की आय प्राप्त हो चुकी है।

इस केन्द्र में ही प्रसंस्करित बांस से फेंसिंग पोल का भी निर्माण किया जाता है। केन्द्र द्वारा कृषकों से कटंग बांस क्रय कर बांस के ट्रीटेड पोल्स का निर्माण किया गया है। यहां निर्मित किये जाने वाले पोल सस्ते, मजबूत एवं परिवहन में सुगम हैं। यहां 4 मी. तथा 2 मी. लंबाई के पोल तैयार किये जाते हैं। ये पोल फेंसिंग के उपयोग में आते हैं। इस केन्द्र से अद्यतन 2 मी. लंबाई के 27925 नग तथा 4 मी. लंबाई के 1907 नग पोल की बिक्री की जाकर राशि रू'.1748432/- की आय प्राप्त की गई है। दो मीटर लंबाई के पोल का वर्तमान मूल्य राशि रू. 70/- प्रति पोल तथा 4 मी. लंबाई के पोल का वर्तमान मूल्य राशि रू. 120/- प्रति पोल है। सामान्य सुविधा केन्द्र में निर्मित इन सस्ते तथा मजबूत बांस पोल का उपयोग फेंसिंग कार्य में किया जाकर फेंसिंग कार्य की लागत को कम किया जा सकता है।

सामान्य सुविधा केन्द्र का संचालन बांस शिल्प स्वसहायता समूह के माध्यम से किया जाता है। जिसमें 35 बांस कामगारों को रोजगार का प्रदाय किया गया है। जिन्हें दिसम्बर 2018 तक राशि रू. 849124/- की आय प्राप्त हुई है। इसके अतिरिक्त उक्त केन्द्र पर कुछ बांस शिल्पकारों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वयं का रोजगार भी स्थापित किया है।

सामान्य सुविधा केन्द्र में माह जून 2017 से दिसम्बर 2018 तक बांस उत्पादक किसानों से 71240 र.मी. कटंग बांस का क्रय किया गया है, जिसके लिये उन्हें राशि रू. 11,89,508/- का भुगतान किया गया है। इससे बांस उत्पादन करने वाले कृषकों को आर्थिक लाभ हुआ है। सामान्य सुविधा केन्द्र टिमरनी समग्र रूप से किसानों तथा बांस शिल्पकारों को सतत् रोजगार देने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

"World Pangolin Day" celebration by MPTFS

A giant Pangolin structure of straight length of 29 feet, curvy length of 32 feet 5 inch, height of 7 feet and width of 6 feet 5 inch is displayed on the occasion of **"World Pangolin Day"** on 16th February 2019 by **Madhya Pradesh Tiger Foundation Society** at DB City Mall, Bhopal, which is an eminent and most popular Mall in Madhya Pradesh, India and has significantly huge number of footfall. The main idea behind the sculpture is to celebrate Pangolin day by sensitizing and create awareness about the Pangolin which are highly poached and comes under schedule-1 & IUCN red list animal in the world. This is the biggest pangolin structure ever made and displayed for public awareness till date in India. The planning, execution, resource management, monitoring etc. of this activity was completely undertaken by the Madhya Pradesh Tigar Foundation Society.

पेंगोलिन दिवस पर पेंगोलिन से जुड़े कुछ पोस्टर्स

बाघिन SD-011 को पुनः जंगली बनाने (Rewilding) की कहानी

बान्धवगढ़ टाईगर रिज़र्व की सुप्रसिद्ध मादा बाघिन कनकटी की मृत्यु के उपरांत 5 माह की मादा शावक को दिनांक 05.08.2014 को रेस्क्यू कर बहेरहा के छोटे से बाड़े में रखा गया। उक्त बाघिन का पालन–पोषण बाड़े में ही किया गया एवं वर्ष 2016 में उक्त बाघिन को पुनः जंगली बनाने (Rewilding) हेतु संजय टाईगर रिज़र्व में लाने का निर्णय लिया गया। दिनांक 11.03.2016 को उक्त बाघिन बान्धवगढ़ से संजय टाईगर रिजर्व के दुबरी परिक्षेत्र में लाई गई एवं कंजरा स्थित 10 हेक्टेयर के टाईगर बाड़े में रखी गई। 7 माह तक इस बाघिन को दुबरी परिक्षेत्र के कंजरा स्थित बाड़े में रखा जाकर निरंतर पर्यवेक्षण किया गया। जहां इसने स्वच्छंद विचरण करते हुए जंगली जानवरों का शिकार करना सीखा। 10.10.2016 को इस बाघिन का निश्चेतीकरण कर इसे रेडियो कॉलर पहनाया गया, तथा स्वतंत्र रूप से विचरण करने के लिए संजय टाईगर रिजर्व के दुबरी परिक्षेत्र के बिटखुरी बीट के कक्ष क्र. 195 में छोड़ा गया। संजय टाईगर रिजर्व में उक्त बाघिन को SD-011 कोड दिया गया तथा इसकी धारियों में कमल जैसी आकृति होने के कारण इसे ''कमली'' नाम से भी जाना जाने लगा। कमली ने संजय टाईगर रिजर्व के नर बाघ SD-005 के सम्पर्क में आने के उपरांत 1 जून 2017 में बीट बिटखुरी के कक्ष क्र. 195 में तीन (3) शावकों को जन्म दिया, जिसमे से 2 मादा व 1 नर शावक अब अर्द्ध वयस्क होकर संजय टाईगर रिजर्व के वनों में SD-017, SD-018 एवं SD-019 के रूप में स्वच्छंद भ्रमण कर रहे हैं। 21 माह के अन्तराल में कमली ने पुनः 1 मार्च 2019 को चार (4) शावकों को जन्म दिया है, जिनका निरंतर अनुश्रवण किया जा रहा है।

इस प्रकार कमली बाघिन जिसे 5 माह की अल्पायु में बान्धवगढ़ में रेस्क्यू किया गया था, अब पूर्ण रूप से प्राकृतिक परिवेश में स्थापित होकर संजय टाईगर रिजर्व के अन्तर्गत बाघों की वंशवृद्धि सफलतापूर्वक कर रही है।

Rescue of strayed Tiger from Maharashtra in Betul (M.P.)

The movement of a tiger was reported in the vicinity of Sarni area of North Betul division. DFO North Betul and his staff closely monitored the movement of this tiger for 15 to 20 days constantly. Dr. Prashant Deshmukh, wild life veterinarian, Wildlife Conservation Trust, Mumbai going through the images of the camera traps could identify that this tiger was from Maharashtra and it has travelled around 400 km to reach Sarni of Betul district. He also confirmed that this Tiger had killed two men in Maharashtra enrouting to Madhya Pradesh. This was a real cause of concern for all the forest officials, hence it was decided to capture the tiger and release it to nature habitat area after keeping in enclosure for few days and monitoring closely its behavior. Finally on the direction of CWLW MP, this tiger was tranquilized and rescued from Sarni area of North Betul forest division on 11th December 2018, and released into enclosure located at Ghorella in Kanha Tiger Reserve for monitoring of its health and behavior.The Field Director, Kanha along with Dr. Sandip Agrawal, wildlife veterinarian and local officers at Mukki monitored this animal, and Dr. AB Shrivastava, Director (Retd.), School of Wildlife Health and Forensics, Nanaji Deshmukh Veterinary Education University, Jabalpur was also called for monitoring the health of the animal in between. During the monitoring, the following facts came into light:

- On 11-12-2018, just after the releasing of tiger into the enclosure, the animal tried to pull a part of the enclosure to make way for escape. However, the local officials immediately strengthened the fencing to prevent the escape. The tiger then never tried to pull or break the fencing.
- This enclosure already had nine chital, the natural prey of tigers. Besides, flowing and stored water was also available in the enclosure. The tiger, however, took no interest in hunting or chasing the prey.
- Continuous effective monitoring of tiger was ensured by deploying employees/ protection labourers at the three watchtowers. Preinstalled CCTV cameras were for continuous surveillance. Besides, a team of two elephants was deployed for monitoring the tiger.
- On 11-12-2018, meat, live goat, and live buffalo calf were also set, but the animal took absolutely no interest in the feeding.
- The tiger continuously ignored the moving chital for killing kept inside the enclosure and the live bait from 11-12-2018 to 23-12-2018, and it seemed that being a sub-adult the tiger was still learning to hunt the prey.
- From 11-12-2018 onwards, the tiger was

observed to be continuously under stress was avoiding the human presence around. Besides, it also maintained a distance from a 10-month old tiger already kept in the enclosure also seemed fearful of previously kept tiger.

- The tiger never roared at elephants on being approached, and was found to be running here and there and hiding in the grass. The wildlife veterinarian observed it drinking water from a waterhole few times.
- The tiger was administered multi-vitamin and antibiotic through darting by the wildlife veterinarian on 22-12-2018.
- The tiger killed a chital on 24-12-2018. When the Field Director along with the wildlife veterinarian inspected the kill, all bones were found intact. It seemed that the tiger was learning the art of killing the prey, and was only feeding on muscular parts.
- When the range officer, Mukki inspected the kill on 26-12-2018, he found that around 90% of the chital had been eaten, and only head bones and intestines were left at the site.
- Physical activities of the tigers such as walking, running, sitting, and hiding were found normal and healthy.

The aforementioned facts indicated that initially the tiger could not make a kill due to stress and being subjected to a completely new environment. However, later he became normal and killed a total of 15 chital till 30th January, 2019.

The Kanha management obtained permission from the Principal Chief Conservator of Forests (Wildlife), Madhya Pradesh to release this animal into a low tiger density area of the Satpura Tiger Reserve. As per the standard protocol of tiger capture, restraint, transportation and release, the animal was released into the select site of the Satpura Tiger Reserve on the 31st January, 2019.

This released tiger, however, stayed in the tiger reserve only for a few weeks, and started moving outside. Radio signals showed its movements towards Betul, and the animal ultimately reached the Sarni area again. The tiger was recaptured and transported to Kanha and released into the Ghorella enclosure again on 07/03/2019. Presently, the animal is housed in Ghorella enclosure and leading a normal life and in good stage of health.

L. Krishnamoorthy, IFS
Field Director, Kanha Tiger Reserve

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में फायर प्रोटेक्शन कार्य

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में अग्नि से बचाव के उपाय

फायर लाइन कटाई रोड किनारे मुख्य मार्ग

वॉच टावर

रेस्क्यू क्षेत्र में फायर लाइन कटाई सफाई

मार्ग के दोनों ओर फायर लाइन कटाई सफाई

वन विहार में ग्रास मिडो विकास

वन विहार में ग्रीष्मकाल में शाकाहारी वन्यप्राणियों जैसे सांभर, चीतल, नीलगाय, कृष्ण मृग आदि के भोजन हेतु बरसीम (हरे चारे) की व्यवस्था की गई है। हरे चारे का उत्पादन 'बरसीम बाड़े' में किया जा रहा है।

हरा चारा

पोषक खाद्य सुदाना

खाने योग्य घास का संग्रहण

चारा वितरण

(वन्यप्राणी पर्यावास का समन्वित विकास) हेबीटेट मैनेजमेंट

वन विहार में स्वतंत्र विचरण कर रहे वन्यप्राणियों जैसे सांभर, चीतल, नीलगाय, कृष्ण मृग आदि के लिये अवांछित पौधे उखाड़कर साफ किया गया है, जिससे खाने योग्य घास उनका स्थान ले सके।

वीड इरेडिकेशन

वर्षाकाल पश्चात अवांछित पौधे (लेंटाना, चिरोटा, जंगली तुलसी आदि)

हेबीटेट विकास कार्य अवांछित पौधा हटाई

साफ क्षेत्र

(वन्यप्राणी पर्यावास का समन्वित विकास)
मेंटिनेंस ऑफ वॉटर रिर्सोसेस

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में भूमि एवं मृदा संरक्षण कार्य

बर्ड इंटरप्रिटेशन सेंटर में वाटर होल निर्माण

रेस्क्यू क्षेत्र में परकोलेशन टैंक का निर्माण

न्यु टाइगर हाउसिंग के सामने परकोलेशन टैंक का निर्माण

रेस्क्यू क्षेत्र में परकोलेशन टैंक का निर्माण

''ई–चरक'' और औषधीय पौधों के लिए स्वैच्छिक प्रमाणन योजना

("e-CHARAK" & Voluntary Certification Scheme for Medicinal plants)

औषधीय पौधों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में एक दिवसीय क्षेत्रीय संगोष्ठी का आयोजन

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र, जबलपुर द्वारा सीडेक, हैदराबाद के सहयोग से औषधीय पौधों की उपलब्धता, मांग एवं देश की प्रमुख मण्डियों के बाजार भाव से संबंधित राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड तथा सीडेक, हैदराबाद द्वारा विकसित इंटरैक्टिव मोबाइल एप 'ई–चरक' एवं औषधीय पौधों की स्वैच्छिक प्रमाणीकरण योजना पर एक दिवसीय क्षेत्रीय सेमीनार दिनांक 16.01.2019 को राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के के.पी. सागरीय सभागार में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मध्य क्षेत्र एवं छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न क्षेत्रों से आये औषधीय पौध उत्पादक, कृषक, संग्राहक, प्रसंस्करणकर्ता, व्यापारी, वैद्य, अनुसंधानकर्ता, वन अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञों द्वारा ई–चरक तथा स्वैच्छिक प्रमाणीकरण योजना पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

डॉ. पी.के. शुक्ल (सेवानिवृत्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक) एवं क्षेत्रीय निदेशक क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र, जबलपुर की अध्यक्षता में आयोजित सेमीनार में राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली से डॉ. नरेश कुमावत, सीडेक हैदराबाद से श्रीमति विजयलक्ष्मी बी, श्री ओ.पी. तिवारी, अपर संचालक, श्रीमती अर्चना मरावी, जिला आयुर्वेद अधिकारी, डॉ. जी. राजेश्वर राव, निदेशक ऊष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, श्री गंगाधर द्विवेदी, संभागीय आयुर्वेद अधिकारी, डॉ. रविकान्त श्रीवास्तव, प्राचार्य, आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज, श्री आर. एस. कोरी, मुख्य वन संरक्षक की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का समापन उपस्थित प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए किया गया।

क्षेत्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

क्षेत्रीय संगोष्ठी के प्रतिभागी

प्रकृति एवं वनों में पाए जाने वाले अत्यधिक संकट एवं लुप्त होने वाले औषधीय पौधों की प्रजातियों के जैव–सक्रिय यौगिकों का मात्रात्मक निर्धारण (Butea superba, Alectra chitrakutensis) के संरक्षण के लिए जैव–तकनीकी तथा कीमोप्रोफाइलिंग के द्वारा प्रवर्धन तकनीक (propagation techniques) का मानकीकरण।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के वन आनुवांशिकी, जैव विविधता एवं पादप प्रवर्धन एवं वृक्ष सुधार प्रभाग द्वारा प्रकृति एवं वनों में पाए जाने वाले अत्यधिक संकट एवं लुप्त होने वाले औषधीय पौधों जैसे (Butea superba, Alectra chitrakutensis) जो कि निरगुंडी प्रजाति की जड़ों में परजीवी के रूप में पाया जाता है एवं मध्यप्रदेश में ये केवल सतना जिले के चित्रकूट एवं उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में पाया जाता है, के संरक्षण एवं संवर्धन की तकनीक विकसित की गई है। इस परजीवी पौधे को Macropropagation एवं ऊतक संवर्धन (Tissue Culture) विधि द्वारा संवर्धन किया गया है।

अलेक्ट्रा चित्रकुटेंसिस के माइक्रोप्रोपैजेशन और इन विट्रो तकनीक से होस्ट पौधों पर उगाए गए पौधे

.....

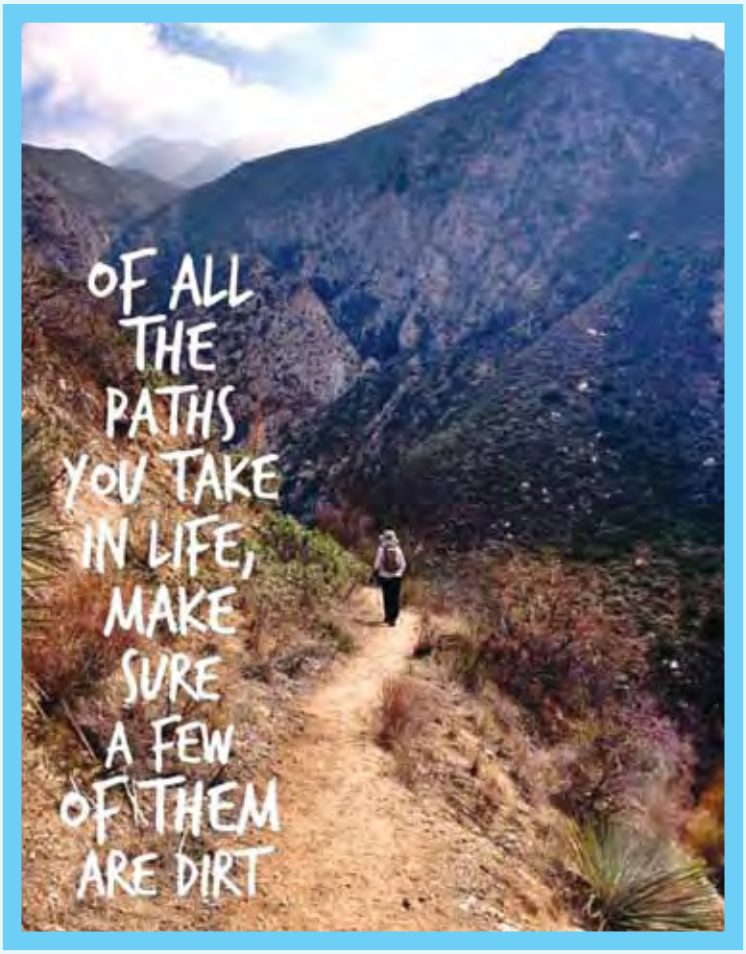

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

जबलपुर में चलित मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का क्षेत्रीय स्तर पर मृदा परीक्षण।

चलित मृदा परीक्षण प्रयोगशाला द्वारा जिला सिवनी में मृदा परीक्षण

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के चलित मृदा परीक्षण प्रयोगशाला (Mobile Soil Testing Van) सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के वन क्षेत्रों एवं अन्य स्थलों पर किये जाने वाले वृक्षारोपण हेतु रोपण के पूर्व मृदा परीक्षण कर चयनित वृक्षों हेतु आवश्यक पोषक तत्वों जैसे नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश एवं अन्य तत्वों की उपलब्धता की जानकारी त्वरित उपलब्ध कराई जा रही है, जिससे रोपण पूर्व मृदा में उचित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग कर वृक्षों का आपेक्षित ढंग से विकास तथा इसका सीधा लाभ प्रदेश वासियों और पर्यावरण को मिले।

चलित मृदा परीक्षण प्रयोगशाला द्वारा प्रदेश के कृषकों

के निजी खेतों की मिट्टी का परीक्षण भी किया जा रहा है। वर्श 2018–19 में कटनी, रायसेन, इंदौर, मंडला, दक्षिण सिवनी, उत्तर सिवनी, नरसिंहपुर, जबलपुर एवं बालाघाट के वनमंडलों में कुल 415 मृदा नमूनों का परीक्षण कर परीक्षण प्रतिवेदन संबंधित वनमंडलों को प्रदाय किया गया है।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में चलित मृदा परीक्षण प्रयोगशाला द्वारा मध्यप्रदेश, वन विभाग के अनुसंधान एवं विस्तार केन्द्रों में मृदा परीक्षण।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान में प्रचलित परियोजना ''चलित मृदा परीक्षण प्रयोगशाला'' के माध्यम से म.प्र. के अनुसंधान एवं विस्तार केन्द्रों में मृदा परीक्षण कर मृदा में उपस्थित पोशक तत्वों की जानकारी प्रदान करने के अंतर्गत माह जनवरी एवं फरवरी 2019 तक मध्यप्रदेश के ग्यारह अनुसंधान विस्तार वृत्तों जबलपुर, रीवा, ग्वालियर, सागर, भोपाल, रतलाम, झाबुआ, इंदौर, खंडवा, बैतूल एवं सिवनी की समस्त 162 रोपणियों के कुल 443 मृदा नमूनों का परीक्षण चलित मृदा परीक्षण प्रयोगशाला के द्वारा मौके पर जाकर किया एवं मृदा परीक्षण प्रयोगशाला के समस्त उपकरणों मृदा नमूना एकत्र करने का तारीका एवं मृदा विश्लेषण की विधि के बारें में जानकारी अनुसंधान विस्तार वृत्तों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रदाय की गई।

चलित मृदा परीक्षण प्रयोगशाला द्वारा अनुसंधान एवं विस्तार केन्द्र झाबुआ में मृदा का परीक्षण

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा देवास वनमण्डल में लोक वानिकी प्रबंध योजना का क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन

प्रधान मुख्य वन संरक्षक, (अनुसंधान/ विस्तार एवं लोक वानिकी), म.प्र. भोपाल द्वारा लोक वानिकी प्रबंध योजना का क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन करने हेतु संस्थान को एक प्रस्ताव तैयार करने बाबत् निर्देशित किया गया है। इस तारतम्य में संस्थान के वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारियों ने लोक वानिकी प्रबंधन एवं धारा 240 – 241 के अंतर्गत कृषकों के निजी स्वामित्व में आने वाले वृक्षों के प्रबंधन एवं निस्तारण संबंधी प्रारंभिक क्षेत्र सर्वेक्षण, देवास वनमंडल के कन्नौद, खातेगांव, सतवास तहसीलों में विभिन्न ग्रामों के कृशकों तथा लोकवानिकी किसान संघ, देवास के अध्यक्ष श्री किशनलाल पटेल एवं सचिव श्री प्रेमलाल से मिलकर चर्चा कर परियोजना प्रस्ताव के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की गयी।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में स्थापित क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र : मध्य क्षेत्र, जबलपुर की गतिविधियाँ
(Regional Cum Facilitation Centre : Central Region, Jabalpur)

संस्थान में स्थापित क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र : मध्य क्षेत्र, जबलपुर द्वारा औषधीय पौधों के कृषकों के लिए शासकीय योजनाओं के अंतर्गत औषधीय पौधों की खेती से संबंधित प्रशिक्षण तथा एक्सपोजर विजिट कराया गया है। इस तारतम्य में दिनांक 08.01.2019 को धुरकुटा, जिला डिण्डौरी, मध्यप्रदेश में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले औषधीय पौधों के सतत् विदोहन तथा संरक्षण हेतु कार्यान्वित क्षेत्रीय मॉडल पर एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। दिनांक 29.01.2019 को ईको सेन्टर देवरी, जिला मुरैना, मध्यप्रदेश में गुग्गल के विनाशविहीन विदोहन एवं संरक्षण पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 150 प्रशिक्षणार्थी उपस्थित रहे। दिनांक 12.02.2019 को मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के 36 औषधीय पौध के उत्पादन तथा प्रसंस्करणकर्ता, प्रगतिशील कृषक, व्यापारी एवं निर्यातकर्ता तथा वन विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को लघु वनउपज प्रसंस्करण एवं अनुसंधान केन्द्र (MFP, PARC) विंध्य हर्बल, बरखेड़ा पठानी, भोपाल में एकदिवसीय एक्सपोजर विजिट कराया गया। दिनांक 21.02.2019 को राज्य वन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रायपुर में छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश राज्य के औषधीय पौध उत्पादक, संग्राहक, विक्रेता, प्रसंस्करणकर्ता, वैद्य एवं अनुसंधानकर्ताओं हेतु एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 70 प्रतिभागी उपस्थित रहे। इस कार्यशाला में प्रतिभागियों द्वारा ई–चरक को एंड्रायड एप के अलावा दूसरे मोबाइल के लिए भी बनाए जाने, वन उपज को मध्यप्रदेश की तरह छत्तीसगढ़ में भी करमुक्त करने, मण्डी टैक्स, जी.एस.टी. तथा जिला स्तर पर प्रसंस्करण एवं भण्डारण की व्यवस्था सुनिश्चित करने की सिफारिश की गई।

लघु वनउपज प्रसंस्करण एवं अनुसंधान केन्द्र (MFP, PARC) विंध्य हर्बल, बरखेड़ा पठानी, भोपाल में एकदिवसीय एक्सपोजर विजिट।

ईको सेन्टर देवरी, जिला मुरैना, मध्यप्रदेश में गुग्गल के विनाशविहीन विदोहन एवं संरक्षण पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन।

राज्य वन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रायपुर में छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश राज्य के औषधीय पौध उत्पादक, संग्राहक, विक्रेता, प्रसंस्करणकर्ता, वैद्य एवं अनुसंधानकर्ताओं हेतु एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन।

धुरकुटा, जिला डिण्डौरी, मध्यप्रदेश में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले औषधीय पौधों के सतत् विदोहन तथा संरक्षण हेतु कार्यान्वित क्षेत्रीय मॉडल पर एकदिवसीय प्रशिक्षण आयोजित।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा लाख की खेती पर महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

लाख की कृषि तकनीक पर प्रशिक्षण सह कार्यशाला का महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों में आयोजन।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में सामाजिक आर्थिक, विपणन एवं मापिकी प्रभाग द्वारा संचालित Network Project Conservation of Lac Insect Genetic Resources के अंतर्गत म.प्र. तथा महाराष्ट्र में 10 प्रशिक्षण सह कार्यशालाओं का आयोजन 2019–20 में किया जाना प्रस्तावित है जिसके अंतर्गत गढ़चिरौली, भंडारा एवं गोन्दिया जिलों में सोमनापुर, मल्खापुर, नवेगांव,

लेण्डेझरी, धावडीटोला ग्रामों में दिनांक 08/01/2019 से 10/01/2019 तक लाख उत्पादन हेतु प्रशिक्षण सह कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यशालाओं में वन समितियों के सदस्यों, प्रगतिशील कृषकों एवं अन्य ग्रामीणों को पलाश के वृक्ष पर वैज्ञानिक विधि से लाख की कृषि प्रक्रिया हेतु प्रशिक्षण कार्यशालाओं के प्रशिक्षणार्थियों को लाख की उपयोगिता, लाख के प्रकार, लाख के सह उत्पादन, लाख के पोषक वृक्ष, महाराष्ट्र में लाख उत्पादन, पलाश के वृक्षों में लाख की कृषि प्रक्रिया, लाख के परभक्षी, परजीवी, हाइपर पैरासटिओईइस कीट के रोकथाम, लाख उत्पादन हेतु आवश्यक उपकरण एवं लाख उत्पादन में संबंधित अन्य जानकारियाँ, व्याख्यान, पावर प्वांइट प्रजेन्टेशन एवं क्षेत्रीय प्रदर्शन के द्वारा प्रदान की गई। उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यशाला संस्थान के वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी एवं सह मुख्य अन्वेषक श्री अनिरूद्ध सरकार, वरिष्ठ अध्येता बलराम लोधी एवं परिक्षेत्र सहायक भारत आर्मो के द्वारा प्रदान किया गया, जिससे कुल 155 प्रशिक्षणार्थी लाभांवित हुए।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में तेलंगाना राज्य वन अकादमी, दुलापल्ली, हैदराबाद से प्रशिक्षु वन क्षेत्रपालों के संस्थान में शैक्षणिक भ्रमण

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का तेलंगाना राज्य वन अकादमी, दुलापल्ली, हैदराबाद से प्रशिक्षु वनक्षेत्रपाल का शैक्षणिक भ्रमण।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में दिनांक 30.03.2019 को 24 प्रशिक्षु वन क्षेत्रपालों द्वारा उनके प्रशिक्षण के दौरान संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों से अवगत होने बाबत् शैक्षणिक भ्रमण पर उपस्थित हुए। उनके द्वारा संस्थान की औषधीय पौध की नर्सरी, बीज एकत्रीकरण, प्रसंस्करण एवं भण्डारण की तकनीक तथा बीज प्रमाणीकरण, मृदा परीक्षण, टिशु कल्चर, वन्यप्राणी, पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन, लाख की खेती, जलवायु परिवर्तन एवं वन मापिकी से संबंधित जानकारी प्रदान की गई। उनके द्वारा संस्थान द्वारा प्रकाशित विभिन्न अभिलेखों का भी अवलोकन किया गया।

आँवले पर लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनकी रोकथाम

आँवला (इम्ब्लिका आफिसिनेलीस Emblica officinalis Gaeth)

गठान रोग कीट (Betusa styophora swinhoe) :

इसका लार्वा चमकीले काले रंग का होता है। यह कीट नर्सरी के पौधों और आंवले के बगीचे को जून से अगस्त के बीच हानि पहुँचाते हैं। इस का लार्वा नये तने के अग्र भाग में छेद कर उसमें प्रवेश कर जाता है और संक्रमित भाग में गठान निर्मित हो जाती है। यह कीट तने में गठान निर्मित कर पौधे को भारी क्षति पहुँचाते हैं, जिससे गठान के आगे पौधे का विकास रूक जाता है।

मानसून के आखिर में सितम्बर से अक्टूबर के बीच पूरी तरह से विकसित हो चुके गठान को डालियों के शीर्ष पर देखा जा सकता है, जो कि विकृत एवं अविकसित डालियाँ रह जाती हैं। गठान की लंबाई 2.5–3.5 से.मी. एवं चौड़ाई 1.5–2.0 से.मी. तक होती है। एक सक्रिय गठान की पहचान उसमें पाए जाने वाले छोटे छिद्र से लाल–नारंगी चिपचिपे स्त्राव का पाया जाना होता है जो कि इल्ली का मल होता है।

- **क्षति एवं लक्षण :–** पतंगा का लार्वा आँवले की टहनी के अग्र भाग में गॉल या गठान का निमार्ण करता है। नयी गुलाबी टहनी में ये सुरंग बनाकर प्रवेश कर जाता है, तत्पश्चात् उस स्थान पर गठान का निर्माण होने लगता है।

- **बचाव के उपाय :–**

अ. गत वर्ष की गठान को मई माह तक काट कर नष्ट कर देना चाहिये। यदि नया प्रकोप बहुत अधिक विकसित हो गया है तो उक्त शाखाओं को भी काट कर नष्ट कर देना चाहिये, जिससे की कीट का जीवनचक्र समाप्त हो जाये। यह कार्य अगस्त–सितम्बर माह तक कर लेना चाहिये अन्यथा कीट वयस्क रूप में निकल कर आगे भी पौधों को क्षति पहुँचाएगा।

ब. अप्रैल से जून माह तक हर 20 दिन के अंतराल पर **रोगोर 0.03 प्रतिशत या मोनोक्रोटोफास या एन्डोसलफॉन का छिड़काव (0.05 प्रतिशत)** कोमल शाखाओं पर करना चाहिये, जिससे कीट के अंडे या लार्वा समाप्त हो जायें एवं रोग नियंत्रित हो सके।

स. संस्थान द्वारा किये गये अनुसंधानों के परिणामों से स्पष्ट है कि इस कीट के प्रकोप से बचने हेतु 15 से 20 दिन के अंतराल पर **डेल्टामेंथ्रिन का 0.002 प्रतिशत** का छिड़काव करने पर अत्यधिक प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकता है। इसके अलावा **मोनोक्रोटोफास का 0.05 प्रतिशत, ट्राईजोफास का 0.05 प्रतिशत** छिड़काव भी किया जा सकता है।

आँवलें की पत्तियों को खाने वाले कीट :

अकिया जनाटा (Achaea janata)

इस कीट की इल्ली भूरी या काली होती है और बगल में उसके साथ लाल या सफेद रंग के पट्टे होते हैं। इल्लियां पत्तियों को

नीचे की तरफ से नसों को छोड़कर भुक्खड़ जैसे खाते रहती हैं। इस कीट का प्रकोप जुलाई–सितम्बर माह तक रहता है। मादा पतंग पत्तियों के पर एक–एक करके अंडे देती है। इस कीट की प्रतिवर्ष 5–6 पीढ़ियाँ होती हैं।

सेलेपा सेल्टिस (Selepa Celtis)

इस कीट की इल्लियां बाल युक्त होती है। इस पर पीले रंग के साथ काले धब्बे दिखाई देते हैं। प्रतिवर्ष इस कीट की 5–6 पीढियाँ होती हैं। इस कीट का प्रकोप जुलाई से अक्टूबर तक होता है। इल्लियां पत्तियों को बुरी तरह से खाती हैं और समूह में दिखाई देती हैं।

पेपीलिओ डिमोलियस (Papilio Demoleus)

इस कीट की बादामी या गहरे हरे रंग की इल्ली कोमल पत्तियों को खाती है और पौधों को क्षति पहुंचाती हैं। इस कीट का प्रकोप जुलाई से अक्टूबर तक रहता है।

- **नियंत्रण :** पत्तियाँ खाने वाले इन कीटों के नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफास 0.05 प्रतिशत (1.3 मि.ली. दवा प्रति ली. पानी में घोलकर) 15 दिन के अंतराल पर कम से कम दो बार छिड़काव करना चाहिये।

निपीकोकस वेस्टेटर (Nipaecoccus Vastater Maskell)

- **क्षति एवं लक्षण :** ये मिलिबग (रुई वाले कीट) पौधे की टहनियाँ, पत्तियाँ, नयी शाखाओं, कलियों और जड़ों के पास झुण्ड बनाकर रहते हैं। इन हिस्सों में से ये मिलिबग पौधे का रस चूस लेते हैं। जिससे पौधों की पत्तियों का कुम्हलाना, छोटा होना, सूख जाना, फूल का झड़ जाना, फलों का असामायिक गिरना प्रारंभ होना आदि लक्षण दिखना प्रारंभ हो जाता है। ये कीट पूरे वर्ष रहते हैं, परंतु जून से नवम्बर के बीच इनकी सक्रियता बढ़ जाती है।
- **नियंत्रण :** डायमिथोएट 30 ईसी. कोन्फिडोर 17.8 एसल और प्राफोनोफॉस 50 ईसी 0.06 और 0.1 प्रतिशत सांद्रता में अत्याधिक प्रभावी पाया गया।
- **रसायनिक दवाओं का घोल बनाने कि विधी :** प्रत्येक दवाई के पैकेट पर उसकी सांद्रता अंकित होती है। यह द्रव्य के लिये E.C. एवं पावडर के लिये W.P. के रूप में होती है। अत: रसायनिक दवाओं का घोल बनाने के लिये निम्न तरीका अपनाना चाहिये:–

$$\text{दवाई की आवश्यक मात्रा} = \frac{\text{कुल आवश्यक मात्रा X आवश्यक सांद्रता}}{\text{दवाई की दी गई सांद्रता}}$$

यदि दवाई के पैकेट पर उसकी सांद्रता 36 E.C. अंकित होती है और हमें 14 लीटर दवाई बनानी है तो दवाई निम्नानुसार बनायी जायेगी।

$$\text{दवाई की आवश्यक मात्र} = \frac{\text{(14 ली.) 14000 मि.ली. X 0.05\%}}{\text{36 E.C.}}$$

$$= \text{19.4 मि.ली.}$$

जैवसंसाधनों तक पहुंच एवं लाभ का प्रभाजन (Aceess and Benefit Sharing)

Workshop on "Laws on Biodiversity & Forest Conservation"

मध्यप्रदेश राज्य ज्यूडिशियल अकादमी, हाईकोर्ट मध्यप्रदेश, जबलपुर एवं मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड के तत्वाधान में "Laws on Biodiversity & Forest Conservation" विषय पर माननीय न्यायमूर्ति श्री आर. एस. झा की अध्यक्षता में कार्यशाला का आयोजन दिनांक 23.02.2019 को राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में किया गया। कार्यशाला में श्री जे.के. मोहन्ती, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश, श्री एन.एस. डुगंरियाल, संचालक, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, सदस्य सचिव, म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड, श्री प्रदीप कुमार व्यास, संचालक, म.प्र. राज्य न्यायिक अकादमी, डॉ. एम. कालीदुरई, मुख्य वन संरक्षक, वन वृत्त, जबलपुर अतिथि उपस्थित हुये। कार्यशाला में 17 सिविल जज, 8 सहायक लोक अभियोजन अधिकारी एवं 22 वनाधिकारी उपस्थित हुये। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के प्रारंभ में श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, सदस्य सचिव, म.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा जैवविविधता अधिनियम, 2002, मध्यप्रदेश जैवविविधता नियम, 2004 एवं जैवसंसाधनों तक पहुँच और सहयुक्त जानकारी तथा फायदा बॉटना विनियम, 2014 के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया एवं जैवविविधता के महत्व को प्रतिपादित किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में माननीय न्यायमूर्ति श्री आर.एस. झा द्वारा इस बात को रेखांकित किया गया कि हमारे वन, प्राकृतिक संसाधन एवं जैवविविधता आने वाली पीढ़ियों की धरोहर है, जिसे संरक्षित करना नितांत आवश्यक है।

मध्यप्रदेश राज्य ज्यूडिशियल अकादमी, हाईकोर्ट मध्यप्रदेश, जबलपुर एवं मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड के तत्वाधान में "Laws on Biodiversity & Forest Conservation" विषय पर कार्यशाला।

Workshop on "Biological Diversity Laws and Access & Benefit Sharing"

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP), नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी (NLSIU), बैंगलोर, राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण, चेन्नई एवं मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, भोपाल के सहयोग से "Biological Diversity Laws and Access & Benefit Sharing" विषय पर दिनांक 16 एवं 17 जनवरी 2019 को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन जागरण लेक सिटी विश्वविद्यालय भोपाल में किया गया।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि डॉ. वी. विजयकुमार, कुलपति, NLIU, भोपाल एवं सम्मानीय अतिथि श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, सदस्य सचिव, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, भोपाल द्वारा "Biological Diversity Laws and Access & Benefit Sharing" विषय और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जैवविविधता संरक्षण एवं जैवविविधता अधिनियम तथा नियम के उद्देश्य के क्रियान्वयन के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर "Biodiversity Laws & ABS" विषय पर एक पुस्तिका का विमोचन भी किया गया।

कार्यशाला के प्रथम दिवस के पहले सत्र की शुरुआत कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रोफेसर (डॉ.) साईंराम भट्ट, प्रोफेसर एवं कोर्डिनेटर, CEERA, NLSIU, बैंगलोर के प्रस्तुतीकरण के साथ हुई, जिसमें उन्होंने "Inception

जागरण लेक सिटी विश्वविद्यालय भोपाल में "Biological Diversity Laws and Access & Benefit Sharing" विषय पर कार्यशाला।

Workshop: Significance, History, background and Introduction to the Concept and Principals of conservation of Biological diversity in India", oa "Biological Diversity Act,2002:An Overview" विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। कार्यशाला के दूसरे सत्र में सम्माननीय अतिथि श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, सदस्य सचिव, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, भोपाल द्वारा "M.P. state Biodiversity Rule and ABS provision : Challenges & Prospects" विषय पर प्रस्तुतीकरण दिया गया, जिसमें उन्होंने जैव विविधता अधिनियम, 2002, मध्यप्रदेश जैवविविधता नियम, 2004 के प्रावधानों में निहित लाभों के प्रभाजन के संदर्भ में वैधानिक दृष्टिकोण से अवगत कराया तथा मध्यप्रदेश जैवविविधता बोर्ड की जैवविविधता संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भूमिका के बारे में जानकारी दी। इसके पश्चात प्रोफेसर अर्चिता नारायण, NLSIU, बैंगलोर द्वारा "Biological Diversity Act,2002, section 7" विषय पर प्रस्तुतीकरण दिया गया, जिसमें उन्होंने जैवविविधता अधिनियम की धारा 7 के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। कार्यशाला का संचालन जागरण लेक सिटी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री दिवाकर शुक्ला द्वारा किया गया।

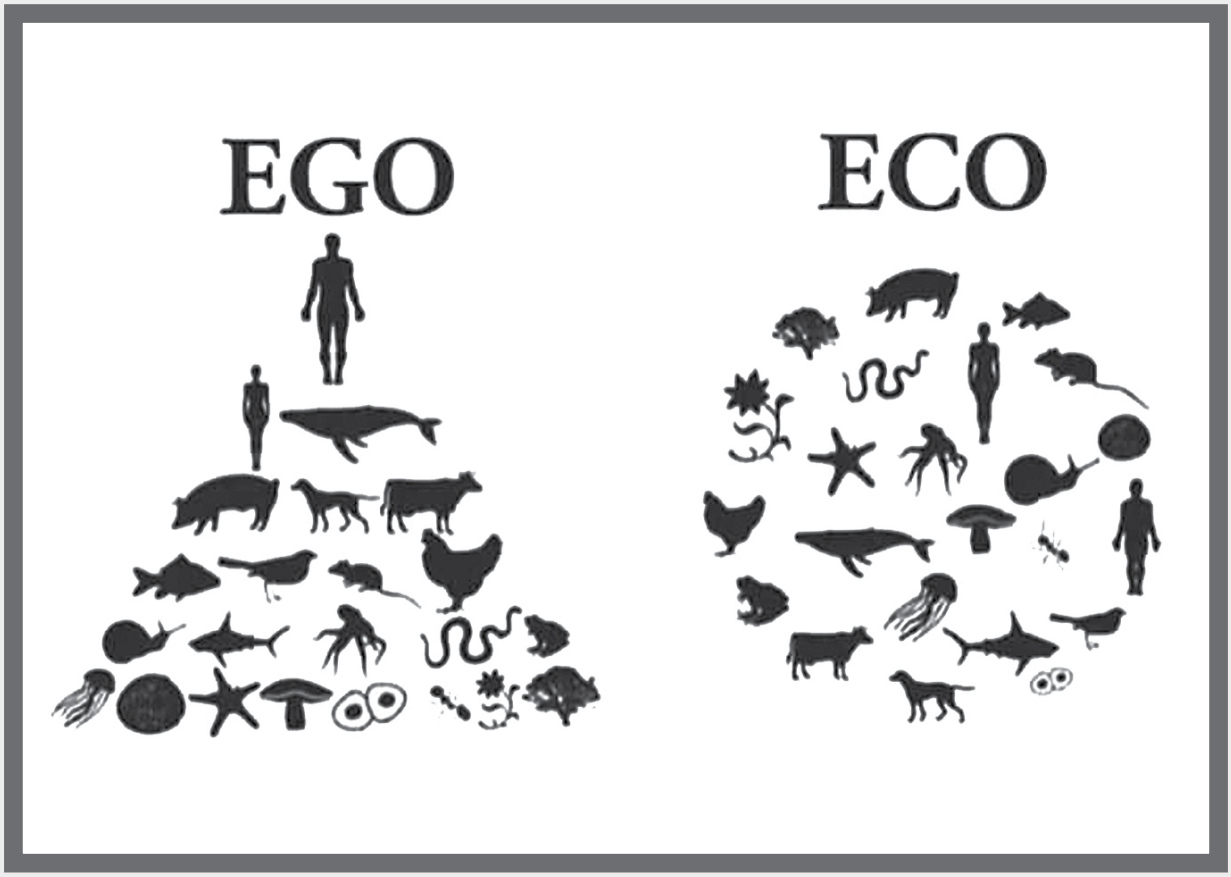

जैवविविधता शिक्षा एवं जागरुकता

राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह-2018 :

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल द्वारा ''राज्य स्तरीय वन्यप्राणी सप्ताह 2018''(दिनांक 01 से 07 अक्टूबर 2018 तक) आयोजन किया गया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा स्टॉल लगाया गया एवं ''वाक इन जैवविविधता कार्यशाला'' अंतर्गत लिखित जैवविविधता प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में स्कूली छात्र-छात्राओं एवं आमजन द्वारा भाग लिया गया।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में बोर्ड द्वारा आयोजित ''वाक इन जैवविविधता कार्यशाला''

विश्व गौरैया दिवस-2018 :

''विश्व गौरैया दिवस'' के अवसर पर मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड एवं भोपाल बर्ड्स संस्था द्वारा क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय, भोपाल में स्कूली एवं महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं हेतु जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 20 मार्च, 2019 को किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. प्रदीप नंदी, निदेशक, एन.सी.एच.एस.ई, भोपाल एवं श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, सदस्य सचिव, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड उपस्थित थे। कार्यक्रम अन्तर्गत लगभग 150 बच्चों ने चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया एवं विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर गौरैया संरक्षण के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने वाले व्यक्तियों को ''गौरैया मित्र'' सम्मान से सम्मानित किया गया एवं लोगों को नेस्ट बॉक्स वितरित किये गये।

गौरैया संरक्षण चित्रकला प्रतियोगिता

अंतर्राज्यीय शैक्षणिक भ्रमण :

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, भोपाल में दिनांक 05.02.2019 को ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' शैक्षणिक/शैक्षणेत्तर भ्रमण कार्यक्रम के अंतर्गत नागालैण्ड के 05 सदस्यीय प्राध्यापक प्रतिनिधि मण्डल द्वारा जैवविविधता संक्षरण संवर्धन, जैवसंसाधनों के संवहनीय उपयोग एवं जैवसंसाधनों से उद्भूत लाभ का प्रभाजन के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नागालैण्ड के दल के साथ उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन के प्रो. शरद तिवारी, एवं प्रो. दिवा मिश्रा उपस्थित रहे। इस अवसर पर मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड के सदस्य सचिव श्री आर. श्री निवास मूर्ति, तथा सहायक सदस्य सचिव डॉ. बकुल लाड, (सी एण्ड डी) एवं डॉ. एलिजाबेथ थॉमस, (प्रोजेक्ट) द्वारा जैवविविधता अधिनियम, 2002 तथा मध्यप्रदेश जैवविविधता नियम, 2004 के प्रावधानों के अंतर्गत प्रदेश में संचालित गतिविधियों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। बोर्ड की ओर से प्रतिनिधि मण्डल को जैवविविधता संरक्षण एवं संवर्धन से संबंधित प्रचार-प्रसार सामग्री (जैवविविधता किट) प्रदान की गई।

''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' के अंतर्गत नागालैण्ड के 05 सदस्यीय प्राध्यापक प्रतिनिधि

जैवविविधता संरक्षण अभियान के पुनरावलोकन कार्यक्रम

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा दिनांक 05 फरवरी 2019 को होटल पलाश, बाणगंगा, भोपाल में श्री बाबूलाल दाहिया जी के वर्ष 2005 से जैवविविधता संरक्षण अभियान के पुनरावलोकन कार्यक्रम का आयोजन श्री जे. के. मोहन्ती, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, म.प्र. की अध्यक्षता में किया गया है। कार्यक्रम में भारत सरकार द्वारा वर्ष 2019 के लिए ''पद्म श्री'' पुरस्कार से सम्मानित श्री बाबूलाल दाहिया, अध्यक्ष, जैवविविधता प्रबंधन समिति, ग्राम पंचायत, पिथौराबाद, जिला सतना का सम्मान किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम में बोर्ड के पूर्व सदस्य सचिव, डॉ. बी.एम.एस. राठौर, श्री अजीत सोनकिया, डॉ. आर.जी. सोनी, श्री सुधीर कुमार, डॉ. एस.पी. रयाल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (कार्य आयोजना), श्री चितरंजन त्यागी, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं कमिश्नर आर्थिकी एवं सांख्यकी विभाग एवं श्री श्याम बोहरे, स्त्रोत व्यक्ति, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड आदि अपने अनुभव साझा किये गये।

श्री दाहिया जी मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड के स्थापना वर्ष 2005 से बोर्ड की जैवविविधता संरक्षण एवं संवर्धन की विभिन्न गतिविधियों से जुड़े हुये हैं। बोर्ड द्वारा श्री दाहिया जी को समुदाय स्तर पर जैवविविधता संरक्षण एवं सवंर्धन के कार्यो में निरंतर सहयोग प्रदान किया गया है। पारंपरिक किस्मों के बीजों, विशेषकर धान की किस्मों

पद्म श्री श्री बाबूलाल दाहिया जी को सम्मानीत करते हुये श्री जे.के. मोहन्ती, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख, म.प्र.

के संरक्षण के लिये उनके द्वारा उल्लेखनीय कार्य किया है। कृषि प्रजातियों की 200 से ज्यादा किस्मों को प्रदेश में संरक्षित और संवर्धित करने में श्री दाहिया जी की महत्वपूर्ण भूमिका है। वर्ष 2017 में मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा आयोजित प्रदेश स्तरीय ''बीज बचाओ–कृषि बचाओ यात्रा'' में भी श्री दाहिया जी ने अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हुये बीज यात्रा दल का नेतृत्व किया और प्रदेश के 39 जिलों से पारंपरिक एवं देशी किस्मों के बीज संग्रहण किया। उनके द्वारा कृषि जैवविविधता संरक्षण के क्षेत्र में किये गये कार्यो को राष्ट्रीय स्तर पर मिली पहचान से निश्चित रूप से पूरा प्रदेश और मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

(1) आंतरिक तकनीकी विशेषज्ञ समिति (ITEC) की द्वितीय बैठक :

मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्य योजना (2018–30) की आंतरिक तकनीकी विशेषज्ञ समिति (ITEC) की द्वितीय बैठक मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड (MPSBB) भोपाल में दिनांक 05 और 6 मार्च, 2019 को आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता आंतरिक तकनीकी विशेषज्ञ समिति के अध्यक्ष डॉ. सी.आर. बाबू, पूर्व प्रो. वाइस चांसलर, प्रोफेसर एमेरिटस, दिल्ली विश्वविद्यालय और परियोजना प्रभारी जैव विविधता पार्क कार्यक्रम के द्वारा की गयी।

श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, सदस्य सचिव मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड ने आई.टी.ई.सी समिति के सदस्यों और उपस्थित प्रतिनिधियों का स्वागत किया और आईटीईसी के अध्यक्ष महोदय की अनुमति के साथ उन्होंने बैठक की शुरुआत की। अपने उद्बोधन में सदस्य सचिव द्वारा मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्य योजना (2018–30) को तैयार करने के लिए मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया से अवगत कराया गया। जैवविविधता के सहयोगी विभागों के विशेषज्ञों और प्रतिनिधियों से जानकारी एकत्र करने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। इसके अलावा सदस्य सचिव ने (ITEC) के सभी सदस्यों से टीम MPSBB द्वारा तैयार ड्राफ्ट में बहुमूल्य सुझाव प्रदान करने का अनुरोध किया।

आंतरिक तकनीकी विशेषज्ञ समिति द्वारा बोर्ड द्वारा तैयार किए गए मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्य योजना (2018–30) के सेक्टर वार ड्राफ्ट की समीक्षा की गई। इसके पश्चात बैठक में उपस्थित समिति के सदस्यों और विभागीय प्रतिनिधियों ने मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्य योजना (2018–30) के ड्राफ्ट की विभागवार समीक्षा की गई तथा अपने बैठक में प्राप्त सुझाव को ड्राफ्ट में आवश्यक स्थान पर सम्मिलित करने हेतु अवगत कराया गया। बैठक में आंतरिक तकनीकी विशेषज्ञ समिति (ITEC) के सम्माननीय सदस्य, ड्राफ्ट समिति के सदस्य, MPBCEPA समिति के सदस्य, UNDP- India के प्रतिनिधि, वन विभाग, किसान कल्याण और कृषि विकास विभाग, उद्यानिकी और खाद्य प्रसंस्करण विभाग, पशुपालन, मछुआ कल्याण और मत्स्य विकास विभाग, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग और मध्यप्रदेश जल संसाधन (MPWRD) के जैव विविधता प्रकोष्ठ के प्रतिनिधियों ने बैठक में भाग लिया।

ITEC के अध्यक्ष डॉ.सी.आर. बाबू ने मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्य योजना (2018–30) के इस दस्तावेज को समझने और लागू करने में आसान बनाने की सलाह दी। उन्होंने मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्य योजना (2018–30) की टीम को निर्देश दिया कि इस कार्य योजना में बैठक में उपस्थित प्रतिभागियों से प्राप्त सभी टिप्पणियों और सुझावों को उपयुक्त स्थान पर शामिल किया जाए। उन्होंने मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्य योजना (2018–30) के प्रारूप को समय पर तैयार करने के ईमानदार प्रयासों के लिए मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड की टीम की सराहना की। ITEC के अध्यक्ष द्वारा इस कार्य योजना में सुधार के लिए बहुमूल्य सुझावों के लिए सभी सदस्यों का धन्यवाद व्यक्त किया गया। आंतरिक तकनीकी विशेषज्ञ समिति (ITEC) की यह दो दिनों की बैठक समिति के सदस्यों,विषय विशेषज्ञों एवं विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों के बहुमूल्य सुझावों एवं सहमति के साथ समाप्त हुई।

बैठक के समापन में, श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, सदस्य सचिव, मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड ने आई.टी.ई.सी के सभी सदस्यों, प्रारूप समिति के सदस्यों, MPBCEPA समिति के सदस्यों, सभी नोडल अधिकारियों और कार्य योजना का प्रारूप तैयार करने में बहुमूल्य योगदान के लिए लाइन विभागों के प्रतिनिधियों को धन्यवाद दिया।

(2) मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्य योजना (2018-30) की अंतिम कार्यशाला

मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति और कार्ययोजना (MPBSAP) 2018–2030 की राज्य स्तरीय अंतिम कार्यशाला का आयोजन आर.सी.व्ही.पी. नोरोन्हा अकादमी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, भोपाल में 07 मार्च 2019 को किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ मुख्य आतिथ्य श्री के. के. सिंह, अपर मुख्य सचिव, वन, मध्यप्रदेश शासन द्वारा किया गया। मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड के सदस्य सचिव श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, द्वारा सभी अतिथियों और कार्यशाला के प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

स्वागत उद्बोधन में सदस्य सचिव द्वारा अवगत कराया गया कि मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति और कार्ययोजना (एसबीएसएपी) वर्ष 2002 में बनाया गया था। लगभग 16 वर्षों के पश्चात इस योजना को राष्ट्रीय जैव विविधता कार्य योजना (एनबीएसएपी) 2008 के ढांचे के अनुरूप 2018–2030 की अवधि के लिए पुनरीक्षित किया गया है। कार्ययोजना में राष्ट्रीय जैवविविधता लक्ष्य (NBTs) SDGs और जलवायु परिवर्तन के मुद्दों को सम्मिलित किया गया है। मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा UNDP-India के सहयोग से मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति और कार्य योजना, 2018–30 के पुनरीक्षण कार्य पूर्ण किया गया है। सदस्य सचिव ने मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड की वैधानिक, विनियामक और सलाहकार भूमिका के संबंध में और संबंधित सहयोगी विभागों की जैवविविधता संरक्षण हेतु भूमिका के संबंध में विस्तार से अवगत कराया गया। कार्ययोजना को विभागवार तैयार किया गया है, जिसमें विभागों की रणनीति व एक्शन प्वाईंट तैयार किये गये हैं। इकोरिजन कार्यशाला एवं सुझाव प्राप्त करने की विभिन्न प्रक्रियाओं के बाद मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्ययोजना, 2018–30 तैयार किया गया है। इस कार्ययोजना का कार्य आंतरिक तकनीकी विशेषज्ञ समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर सी.आर. बाबू पूर्व प्रो. कुलपति, प्रोफेसर एमेरिटस, दिल्ली विश्वविद्यालय और परियोजना प्रभारी जैव विविधता पार्क एवं समिति के सदस्यों के निर्देशन में समिति के विशेष सहयोग से पूर्ण किया गया है।

कार्यशाला के मुख्य अतिथि श्री के.के. सिंह, अपर मुख्य सचिव, वन, मध्यप्रदेश शासन तथा कार्यशाला के अध्यक्ष श्री

MPBSAP 2018-2030 निर्माण कार्य हेतु आंतरिक तकनीकी एवं विशेषज्ञ समिति की बैठक।

MPBSAP 2018-2030 निर्माण की अंतिम कार्यशाला में मुख्य अतिथि के.के. सिंह, अपर मुख्य सचिव, वन, मध्यप्रदेश शासन तथा कार्यशाला के अध्यक्ष श्री जे.के. मोहन्ती, प्रधान मुख्य वन संरक्षक व वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश के आंतरिक तकनीकी एवं विशेषज्ञ समिति के सदस्यगण।

जे.के. मोहन्ती, प्रधान मुख्य वन संरक्षक व वन बल प्रमुख, मध्यप्रदेश द्वारा कार्ययोजना के निर्माण को जैवविविधता संरक्षण की दिशा में सराहनीय कदम बताया गया। इस अवसर पर प्रो. सी.आर.बाबू, अध्यक्ष, आंतरिक तकनीकी विशेषज्ञ समिति (एम.पी.बी.एस.ए.पी.,2018–2030) श्री सुहास कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, (से.नि.), उपाध्यक्ष, आंतरिक तकनीकी विशेषज्ञ समिति (एम.पी.बी. एस.ए.पी.,2018–2030) श्री यू. प्रकाशम, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन्यप्राणी तथा श्री आर.जे. राव, कुलपति, बरकतउल्ला विश्व विद्यालय भोपाल द्वारा सम्बोधित कर कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु सभी विभागों के सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की गई। कार्यशाला के तकनीकी सत्र में मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति और कार्ययोजना (MPBSAP) 2018–2030 के प्रारूप पर विभागवार प्रस्तुतीकरण दिया गया। कार्यशाला में उपस्थित विभागों के प्रतिनिधियों और प्रतिभागियों विशेषज्ञों द्वारा बहुमूल्य सुझाव प्रदान किये गये।

कार्यशाला में आंतरिक तकनीकी एवं विशेषज्ञ समिति (Internal Technical and Expert Committee) के सम्माननीय सदस्य, ड्राफ्ट समिति के सदस्य, Madhya Pradesh Biodiversity Communication and Education and Public Awareness- MPBCEPA समिति के सदस्य, UNDP & India के प्रतिनिधि, वन विभाग, किसान कल्याण और कृषि विकास विभाग, उद्यानिकी और खाद्य प्रसंस्करण विभाग, पशुपालन, मछुआ कल्याण और मत्स्य विकास विभाग, ग्रामीण एवं पंचायती राज विभाग और मध्यप्रदेश जलसंसाधन (MPWRD) के जैवविविधता प्रकोष्ठ के प्रतिनिधियों और आमंत्रित अतिथियों ने भाग लिया।

प्रो. सी.आर. बाबू द्वारा निर्देशित किया गया कि मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्ययोजना (2018–30) मे बैठक में प्रतिभागियों से प्राप्त सभी टिप्पणियों और सुझावों को उपयुक्त स्थान पर शामिल किया जाए। उन्होंने मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्य योजना (2018–30) के अंतिम प्रारूप को अनुमोदित किए जाने की घोषणा की एवं कार्ययोजना को समय पर तैयार करने के लिए मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड की टीम की सराहना की। उन्होंने इस कार्य योजना में सुधार के लिए बहुमूल्य सुझावों के लिए सभी समिति के सदस्यों तथा प्रतिभागियों का धन्यवाद व्यक्त किया।

सदस्य सचिव द्वारा अवगत कराया गया कि मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति व कार्य योजना (2018–30) के इस दस्तावेज दिनांक 22 मई 2019 अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस के अवसर पर औपचारिक रूप से जारी किया जाएगा।

मध्यप्रदेश जैवविविधता रणनीति और कार्य योजना (MPBSAP) 2018–2030 के परिपेक्ष्य में आयोजित राज्य स्तरीय अंतिम कार्यशाला के समापन सत्र में डॉ. बकुल लाड, सहायक सदस्य सचिव, मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड द्वारा पधारे हुए सभी अतिथियों, समिति के सदस्यों, विभागीय प्रतिनिधियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

''राज्य स्तरीय मोगली बाल उत्सव'' 2018

जैवविविधता संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से मध्यप्रदेश शासन द्वारा मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, स्कूल शिक्षा विभाग एवं अन्य सहयोगी विभागों के माध्यम से विद्यालयीन छात्र–छात्राओं हेतु विगत 15 वर्षों से मोगली बाल उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। प्रथम मोगली बाल उत्सव का तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन वर्ष 2004 को पेंच टाईगर रिजर्व, सिवनी में किया गया। इसके पश्चात वर्ष 2005 में द्वितीय एवं तृतीय मोगली बाल उत्सव का तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन क्रमश: पन्ना टाईगर रिजर्व पन्ना एवं बाधवगढ़ टाईगर रिजर्व (ताला) उमरिया में किया गया। चौथे से तेरहवें मोगली बाल उत्सव का आयोजन निरन्तर रूप से पेंच टाईगर रिजर्व, जिला सिवनी में किये गये। इस वर्ष प्रदेश में चौदहवें **''राज्य स्तरीय मोगली उत्सव'' 2018** का आयोजन प्रदेश के छ: अलग–अलग स्थानों पर किया गया है। कार्यक्रम की प्रमुख गतिविधियाँ निम्नानुसार आयोजित की गईं:–

(क) नेचर ट्रेल – इस गतिविधि में सहजकर्ता, शिक्षकगणों एवं गाईडों द्वारा छात्र–छात्राओं को टाईगर रिजर्व के समीप पूर्व निर्धारित ट्रेक पर ट्रेल करवायी गयी। इस दौरान छात्र–छात्राओं को टाईगर रिजर्व के पारिस्थितिकीय तंत्र, विशेषकर जीव–जंतुओं तथा वनस्पतियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां दी गईं एवं छात्र–छात्राओं के प्रश्नों, जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। इस प्रकार छात्र–छात्राओं को वन क्षेत्रों में विद्यमान पारिस्थितिकीय तंत्र, जीव–जंतुओं तथा वनस्पतियों को समीप से देखने एवं समझने का अवसर मिला।

(ग) ट्रेजर हंट एवं हेबिटेट सर्च– ट्रेजर हंट एवं हेबिटेट सर्च संबंधित गतिविधियां बोर्ड के प्रशिक्षित सहकर्ताओं के माध्यम से करवायी गयी। ट्रेजर हंट एवं हेबिटेट सर्च में प्रतिभागियों को विभिन्न वनस्पतियों एवं जीव–जन्तुओं संबंधित पहेली दी गयी तथा विभिन्न स्थानों पर रहवास के अनुसार जीव–जंतुओं के प्राकृतिक अथवा कृत्रिम आवास बनाकर प्रतिभागियों से पहचान करवाई गयी।

(ख) ग्राम भ्रमण – प्रतिभागी छात्र–छात्राओं को टाईगर रिजर्व का भ्रमण जिप्सी वाहनों में कराया गया। प्रशिक्षित सहजकर्ता, शिक्षकगणों एवं गाईडों के द्वारा छात्र–छात्राओं को टाईगर रिजर्व के जीव–जंतुओं तथा वनस्पतियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां दी गई। इस अवसर पर स्कूली छात्र–छात्राओं द्वारा बोर्ड के सहयोग से जैवविविधता से संबंधित चित्रकला एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लिया गया। बोर्ड द्वारा विजेता प्रतिभागियों को ''मध्यप्रदेश के पक्षी पुस्तक'' के रूप में प्रदान की गई। कार्यक्रम के प्रतिभागियों को बार्ड की ओर से जैवविविधता जागरुकता से संबंधित प्रचार प्रसार सामग्री एवं किट प्रदान की गई।

मोगली उत्सव के प्रथम चरण का आयोजन 24.03.2019 से 26.03.2019 तक **कान्हा टाईगर रिजर्व – मण्डला, पन्ना टाईगर रिजर्व – पन्ना पेंच टाईगर रिजर्व –सिवनी** में तथा **द्वितीय चरण का आयोजन दिनांक** 28.03.2019 से 30.03.2019 तक **बाधवगढ़ टाईगर रिजर्व–ताला– उमरिया, मढ़ई (सतपुड़ा) टाईगर रिजर्व–होशंगाबाद तथा माधव टाईगर रिजर्व –** शिवपुरी में किया गया। इन अलग– अलग टाईगर रिजर्व में कार्यक्रम अवधि में बोर्ड के प्रशिक्षित सहजकर्ताओं एवं सहयोगी मास्टर ट्रेनर द्वारा प्रतिभागी छात्र–छात्राओं हेतु जैवविविधता जागरुकता के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। बोर्ड द्वारा आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार एवं समस्त छात्र–छात्राओं को प्रमाण–पत्र वितरित किये गये।

1. कान्हा किसली टाईगर रिजर्व, मंडला :

कान्हा किसली टाईगर रिजर्व जिला मण्डला में आयोजित मोगली उत्सव में मण्डला, जबलपुर, डिण्डोरी, बैतूल, देवास, रतलाम, आगरमालवा, शाजापुर (8 जिलों) के 64 छात्र– शिक्षक, शिक्षिकाओं द्वारा भाग लिया गया। इस अवसर पर वन विभाग द्वारा प्रतिभागियों हेतु इन्टरप्रिटेशन सेंन्टर, कान्हा किसली में प्रदर्शनी एवं वन अधिकारियों द्वारा उद्यान में उपलब्ध जैवविविधता की जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर पार्क के खटिया गेट स्थल पर प्रतिभागियों हेतु बैगा नृत्य का आयोजन किया गया।

2. पेंच टाईगर रिजर्व, सिवनी :

पेंच टाईगर रिजर्व जिला सिवनी में आयोजित मोगली उत्सव सिवनी, बालाघाट, छिन्दवाड़ा, नीमच, मंदसौर, झाबुआ, अलीराजपुर, बड़वानी, उज्जैन (9 जिले) 72 छात्र–शिक्षक एवं शिक्षिकाओं द्वारा भाग लिया गया। इस अवसर पर वन विभाग द्वारा प्रतिभागियों हेतु इन्टरप्रिटेशन सेंन्टर, पेंच सिवनी में प्रदर्शनी एवं वन अधिकारियों द्वारा उद्यान में उपलब्ध जैवविविधता की जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम के समापन अवसर पर श्रीमती मंजूषा

पेंच टाईगर रिजर्व मोगली उत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रीमती मंजूषा विक्रांत राय, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सिवनी, श्री टी.एस. सूलिया, वनमण्डलाधिकरी, श्री जी.एस. बघेल, जिला शिक्षा अधिकारी सिवनी, श्री शिवप्रताप सिंह, सहायक सदस्य सचिव, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड भोपाल।

विक्रांत राय, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सिवनी, श्री टी.एस. सूलिया, वनमण्डलाधिकरी, सिवनी, श्री जी.एस. बघेल, जिला शिक्षा अधिकारी सिवनी, एवं व्ही.पी.तिवारी, एस.डी.ओ, पेंच टाईगर रिजर्व कार्यक्रम मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुये।

3. बांधवगढ़ (ताला) टाईगर रिजर्व जिला-उमरिया :

बांधवगढ टाईगर रिजर्व, जिला उमरिया में दिनांक 28- 30 मार्च 2019 तक आयोजित मोगली बाल उत्सव में प्रदेश के उमरिया, शहडोल, सिंगरौली, राजगढ, सीधी, अनूपपुर, रायसेन, एवं नरसिंहपुर जिलों (8 जिले) से चयनित 64 छात्र-छात्राओं ने शिक्षकों के साथ भाग लिया। कार्यक्रम का उदघाटन श्री रणमत सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी, उमरिया द्वारा किया गया। प्रतिभागियों द्वारा टाईगर रिजर्व में पार्क सफारी, नेचर ट्रेल, ट्रेजर हंट एवं हेबिटेट सर्च संबंधित गतिविधियों में भाग लिया गया।

बांधवगढ टाईगर रिजर्व -ताला उमरिया में मोगली मित्र एवं मोगली समाचार पत्र।

4. मोगली उत्सव, पन्ना टाईगर रिजर्व, पन्ना :

पन्ना टाईगर रिजर्व -पन्ना में मोगली बाल उत्सव में प्रदेश के 8 जिलों (रीवा, सागर, कटनी, सतना, छतरपुर, टीकमगढ़, दमोह, एवं पन्ना) से चयनित छात्र-छात्राओं द्वारा भाग लिया गया। कार्यक्रम का सुभारंभ में मुख्य अतिथि श्री कमल सिंह कुशवाहा, जिला शिक्षा अधिकारी, श्री के.एस. भदौरिया, क्षेत्र संचालक पन्ना टाईगर रिजर्व द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मोगली उत्सव के सभी प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को ग्राम मझगवाँ में हीरा खनन के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

5. मोगली उत्सव, सतपुड़ा टाईगर रिजर्व, मढ़ई, होशंगाबाद :

सतपुड़ा टाईगर रिजर्व, मढ़ई - होशंगाबाद में आयोजित मोगली बाल उत्सव में प्रदेश के 9 जिलों (होशांगाबाद, भोपाल, सीहोर, इन्दौर, धार, बुरहानपुर, खण्डवा, हरदा, खरगौन) से चयनित छात्र-छात्राओं द्वारा भाग लिया गया। बोर्ड द्वारा देनवा नदी के तट पर मोगली उत्सव में चित्रकला एवं क्विज प्रतियोगिता तथा अन्य गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मोगली मित्रों को वन विभाग द्वारा सतपुड़ा टाइगर रिजर्व, मढ़ई के पारिस्थितिकीय तंत्र से संबंधित विभिन्न ज्ञान वर्धन एवं रोचक जानकारी प्रदान

की गई एवं बाघ पर आधारित डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया। मोगली मित्रों द्वारा नेचर ट्रेल में वृक्ष के चारों ओर मानव श्रृखला बनाकर प्रकृति के संरक्षण का संकल्प भी लिया गया तथा विभिन्न वृक्षों की छाल को मोगली की डायरी में छापने एवं दीमक व मकड़ी के घर एवं पत्तियों के रंग परिवर्तन की जानकारी प्राप्त की गई। मोगली उत्सव कार्यक्रम का समापन देनवा नदी के तट पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ संपन्न हुआ।

6. मोगली उत्सव, माधव टाईगर रिजर्व, शिवपुरी :

टाईगर रिजर्व, शिवपुरी में दिनांक 28–30 मार्च 2019 तक आयोजित मोगली बाल उत्सव शिवपुरी में प्रदेश भर के शिवपुरी, श्योपुर, मुरैना, भिण्ड, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, विदिशा (9 जिले) से 72 छात्र–छात्राओं शिक्षक एवं शिक्षिकाओं द्वारा भाग लिया गया। उत्सव के दौरान बोर्ड की ओर से उद्यान में पार्क सफारी, नेचर ट्रेल, ट्रेजर हंट एवं हेबिटेट सर्च संबंधित गतिविधियों का सफल आयोजन किया गया। नेचर ट्रेल तथा ट्रेजर हंट गतिविधियों का आयोजन शिवपुरी से 45 कि.मी. दूर झांसी रोड़ पर स्थित ऐतिहासिक सुरवायागढ़ी में किया गया। बोर्ड द्वारा आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार एवं समस्त छात्र–छात्रओं को प्रमाण–पत्र वितरित किये गये।

मोगली उत्सव मढ़ई, होशंगाबाद एवं पन्ना टाईगर रिजर्व, पन्ना में मोगली मित्रगण

माधव टाईगर रिजर्व –शिवपुरी में मोगली प्रतिभागी गण।

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड की 15वीं बोर्ड बैठक

श्री एस.आर. मोहन्ती, मुख्य सचिव, मध्यप्रदेश शासन एवं अध्यक्ष, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा क्लाईमेट चेंज पुस्तिका का विमोचन।

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड की 15वीं बोर्ड बैठक श्री एस.आर. मोहन्ती, मुख्य सचिव, मध्यप्रदेश शासन एवं अध्यक्ष, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड की अध्यक्षता में दिनांक 04.02.2019 दोपहर 12.00 मुख्य सचिव, मध्यप्रदेश शासन के प्रतिकक्ष, वल्लभ भवन, भोपाल में सम्पन्न हुई। बैठक में श्री प्रभांशु कमल, कृषि उत्पादन आयुक्त मध्यप्रदेश शासन एवं पदेन सदस्य, श्री के.के. सिंह, अपर मुख्य सचिव, मध्यप्रदेश शासन, वनविभाग एवं पदेन सदस्य, श्री जे.के. मोहन्ती, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन बल प्रमुख), म.प्र. एवं पदेन सदस्य, श्री पी.के. बिसेन, कुलपति, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर एवं पदेन सदस्य, श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, सदस्य सचिव, जैवविविविधता बोर्ड एवं पदेन सदस्य सचिव, श्रीमति उर्मिला शुक्ला संचालक, पंचायत राज संचालनालय–विशेष आमंत्रित श्री के.पी. अहिरवाल, अतिरिक्त संचालक, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग–विशेष आमंत्रित उपस्थित हुये। सदस्य सचिव, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा अध्यक्ष एवं सदस्यों के स्वागत उपरांत बैठक एजेण्डा एवं बोर्ड द्वारा संचालित गतिविधियों के संबंध में प्रस्तुतीकरण किया गया। इस अवसर पर श्री एस.आर. मोहन्ती, मुख्य सचिव, मध्यप्रदेश शासन एवं अध्यक्ष, मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा क्लाईमेट चेंज पुस्तिक का विमोचन किया गया।

मोगली समाचार पत्रों से

राज्य स्तरीय मोगली बाल उत्सव

मोगली बाल उत्सव में 8 जिलों के 64 छात्र हुए शामिल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

पवई. तीन दिवसीय राज्यस्तरीय मोगली बाल उत्सव मंगलवार को सम्पन्न हुआ। इसमें सतना, पन्ना, रीवा, सागर, दमोह, कटनी, छतरपुर सहित आठ जिलों के 64 छात्र-छात्राओं एवं 16 शिक्षकों के मार्गदर्शन में रिजर्व टाइगर, हीरो खनन परियोजना, पाण्डव फाल का भ्रमण कराया। तीन समूहों में टीम गठित कर छात्रों को वन एवं वन्य प्राणियों के संरक्षण के संबंध में युवाओं की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण हो सकती है विस्तार [illegible] समझाया। भ्रमण के दौरान रिजर्व टाइगर एवं प्राकृतिक सुन्दरता को देखकर छात्र प्रफुल्लित रहे। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिता चित्र कला, प्रश्न मंच, गीत,संगीत एवं लिखित परीक्षा भी आयोजित की गई। उत्कृष्ट प्रतियोगी को पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम के समापन पर वन विभाग, शिक्षा विभाग सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे। प्रतियोगिता में [illegible] छात्रों ने कहा कि इस [illegible] में शामिल होने से काफी [illegible] मिला।

वनों तथा वन्य जीवों के संबंध में जानकारी ले रहे मोगली मित्र

मोगली मित्रों ने अलग अलग गतिविधियों में हिस्सा लिया

जीव जंतु व वन्य संपदा की ली जानकारी

64 विद्यार्थियों को मिला कान्हा घूमने का मौका

मोगली छात्रों का तिलक लगाकर अभिनंदन

ग्वालियर, शुक्रवार 29 मार्च 2019

9 जिलों से आए बच्चे पहुंचे छत्री और संग्रहालय, विशेषज्ञों ने दी इतिहास की जानकारी

गणतंत्र दिवस पर पारितोषिक वितरण

26 जनवरी 2019, गणतंत्र दिवस के अवसर पर मध्यप्रदेश वन विभाग के अंतर्गत वन/वन्यप्राणी संरक्षण, वानिकी कार्यों एवं वन संवर्धन में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों एवं अधिकारियों की सूची

वनवृत्त खण्डवा

1. श्री संतोष मिश्रा वनपाल परिक्षेत्र सहायक बखतगढ़
2. श्री जयेश अत्रे, वनरक्षक वीट प्रभारी पथिया
3. श्री सरोज अंगला वनरक्षक बीट प्रभारी विलाहा
4. श्री बिरजू घाटे गंजारी चौकी

सामान्य वनमंडल खण्डवा

1. श्री शंकर सिंह चौहान वनपाल
2. श्री संजय रघुवंशी वनरक्षक
3. श्री अनुराग रोकड़े वनरक्षक
4. श्री सचिन प्रताप चौहान वनरक्षक
5. श्री सुभाषचंद्र पटेल वनरक्षक
6. श्री जयपाल सिंह पंवार वनरक्षक
7. श्री मुकेश कुमार स्थाईकर्मी (वाहन चालक)
8. श्री रवि पिता सदाशिव पटेल सुरक्षा श्रमिक
9. श्री प्रताप सिंह बास्कले सहायक उप निरीक्षक
10. श्री राजेश मिश्रा बैच नं. 598 आरक्षक

सामान्य वनमंडल बुरहानपुर

1. श्री गुमान सिंह नरगेरा वनक्षेत्रपाल
2. श्री रघुवेंद्र सिंह राणावत वनरक्षक
3. श्री विजय खम्परिया वनरक्षक
4. श्री विनोद सहरिया वनरक्षक
5. श्री नीलेश भारती वनरक्षक
6. श्री राधु वास्कले वनरक्षक
7. श्रीमती रूपा मुडिया वनरक्षक
8. श्रीमती निर्मला खरते वनरक्षक
9. श्री प्रमेंद्र महेंद्र वनरक्षक
10. श्री सुनील उमरे वनरक्षक

कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी, म.प्र., भोपाल

1. श्री सोमसिंह मवी, उप वनक्षेत्रपाल अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त इन्दौर
2. श्री सुनील शर्मा, वनसेवक अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त इन्दौर
3. श्री आशीष कुमार बिरछिया, वनपाल अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त जबलपुर
4. श्री दीपनारायण तिवारी, वनपाल अनुसंधान एवं विस्तार वृत्तजबलपुर
5. श्रीमती विमला पंवार वनपाल अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त बैतूल
6. श्री हेमंत बिरला वनरक्षक अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त खण्डवा
7. श्री राममिलन याज्ञिक वनपाल अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त रीवा
8. श्री कृष्णकांत पवार वनपाल अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त रतलाम
9. श्री चिन्मय मिस्त्री वनसेवक अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त रतलाम
10. श्री जयसिंह दोहरे वनरक्षक अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त झाबुआ
11. श्री वहीद खान वनपाल अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त सागर
12. श्री पवन तिवारी वनरक्षक अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त सागर
13. श्री राकेश शर्मा वनपाल अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त भोपाल
14. श्री रणछोर दास अग्निहोत्री वनरक्षक अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त भोपाल

वनवृत्त भोपाल के कर्मचारी

1. श्री कृष्णगोपाल भार्गव, वनपाल वनमंडल सीहोर
2. श्री बृजेश कुमार राठौर वनरक्षक वनमंडल सीहोर
3. श्री विनोद कुमार जाटव वनरक्षक वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल

4. श्री अवनीश त्रिपाठी वनरक्षक वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल
5. श्री शर्मानंद गैरे, वनरक्षक, वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल
6. श्री रामपाल सिंह राजपूत, वनरक्षक, वनमंडल भोपाल
7. श्री मेहबूब मो. खान, वनपाल, वनमंडल भोपाल
8. श्री यशवंत सिंह परिहार, वनरक्षक, वनमंडल भोपाल
9. श्रीमती सुधा विजय सिंह भदौरिया, सहायक लोक अभियोजन अधिकारी, भोपाल

अनुसन्धान विस्तार के रोपणियों को दिया गया पुरस्कार

अनुसन्धान विस्तार एवं लोकवानीकी शाखा के अंतगर्त 11 अनुसन्धान विस्तार वृत्तों में स्थित 169 रोपणियों का वर्ष 2018–19 हेतु कार्य के मुल्यांकलन रोपणी प्रबंधन, उत्कृष्ट पौधा तैयारी, लुप्त प्राय एवं संकटापन प्रजाति के पौधे की तैयारी, जैव उर्वरकों का उपयोग, वर्मी कम्पोस्ट का निर्माण, उच्च गुणवत्ता का बीज संग्रहण ,रोपणी पर्यटन एवं अधोसंरचना विकास के आधार पर किया गया, जिसमे निम्न रोपणियों को उत्कृष्ट रोपणियों के लिए चुना गया। पुरस्कार 26 जनवरी के उपलक्ष में श्री जे.के. मोहंती के द्वारा दिया गया।

प्रथम – बड़गोंदा रोपण अनुसन्धान विस्तार वृत्त, इंदौर

द्वितीय – परियट रोपणी अनुसन्धान विस्तार वृत्त, जबलपुर

तृतीय – जयंतीकुंज रोपणी अनुसन्धान विस्तार वृत्त,रीवा

चतुर्थ – क्षिप्राविहार रोपणी उज्जैन अनुसन्धान वृत्त, रतलाम

पंचम – अहमदपुर रोपणी, अनुसन्धान विस्तार वृत्त, भोपाल

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति (जनवरी-मार्च)

1	श्री बृजेश कुमार मिश्रा	प्रधान मुख्य वन संरक्षक
2	श्री भरत कुमार शर्मा	प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन विकास निगम
3	श्री गिरधर राव	प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राज्य वन अनुसंधान केन्द्र, जबलपुर
4	श्री एन.एस. डुंगरियाल	प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कैम्पा, सतपुड़ा भवन, भोपाल
5	श्री सुदीप सिंह	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मध्य प्रदेश राज्य वन विकास निगम, भोपाल
6	श्री सत्यानंद	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं संचालक, उद्यानिकी विभाग, भोपाल
7	श्री आशीष कुमार	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण, भोपाल

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृति (जनवरी-मार्च)

1	श्री बी.एम.एस. राठौर	प्रधान मुख्य वन संरक्षक, आईसीआईएमओडी, चीफ पॉलिसी एडवाइजर, काठमान्डू, नेपाल
2	श्री एन.एस. डुंगरियाल	प्रधान मुख्य वन संरक्षक, म.प्र.राविविनि, भोपाल
3	सूश्री ए. गौतमी	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, सामान्य वनप्रबंधन परियोजना, भोपाल
4	श्री के.पी. शर्मा	मुख्य वन संरक्षक, विकास मुख्यालय, भोपाल
5	श्रीमती हेमन्ती वर्मन	अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, रूरल डेवलेपमेंट, भोपाल
6	श्री एम.के. पाठक	मु.व.सं./क्षेत्र संचालक, बांधवगढ़ टाईगर रिजर्व, उमरिया
7	श्री आर.के. श्रीवास्तव	मु.व.सं., छतरपुर

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

वन प्रबंधन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिला वनकर्मियों का सम्मान

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं के कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध, प्रतितोष) अधिनियम, 2013 के संबंध में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन आन्तरिक परिवाद समिति, वन विभाग द्वारा किया गया।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री जे.के. मोहन्ती के मुख्य आतिथ्य में आयोजित इस कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रीय वनमण्डलों में वन सुरक्षा में कार्यरत् छः महिला वन अधिकारियों और कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। इसी प्रकार राष्ट्रीय स्तर पर खेलकूद प्रतियोगिता में वन विभाग को पदक दिलाने वाली चार महिला कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री मोहंती ने सम्मानित महिला अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि इनके कार्यों से अन्य वनकर्मी भी प्रेरित होंगे। कार्यक्रम में सुश्री पायल रजावत वनपरिक्षेत्र अधिकारी बालाघाट सामान्य, सुश्री गंगी भगत वनपाल माधव राष्ट्रीय उद्यान, सुश्री सरला पद्माकर वनरक्षक लखनादौन उत्तर सिवनी वनमण्डल, सुश्री पुष्पा शर्मा, वनरक्षक विदिशा वनमण्डल, सुश्री शकुंतला गौड वनपाल सामान्य वनमण्डल कटनी, सुश्री रूपा मुडिया वनरक्षक बुरहानपुर को सम्मानित किया गया। इसी प्रकार सुश्री सूसी जोसफ, सुश्री रूबी कौर, श्रीमती रजनी सक्सेना, श्रीमती अनुराधा शर्मा को राष्ट्रीय स्तर पर वन खेलकूद प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन) श्री एस.पी. रयाल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (कार्य आयोजना एवं वन भू-अभिलेख) श्री बी.के. मिश्रा, तथा मुख्यालय में पदस्थ वरिष्ठ वन अधिकारी उपस्थित थे। अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं अध्यक्ष आंतरिक परिवाद समिति श्रीमति संजुक्ता मुद्गल ने महिलाओं के कार्यस्थल पर हो रहे अत्याचार निवारण हेतु विभिन्न कानूनी प्रक्रिया के तहत प्रदाय संरक्षण उपायों के संबंध में जानकारी दी। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. गोपा पाण्डेय, सेवानिवृत्त अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं सुश्री ए. गौतमी, सेवानिवृत्त अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक भी उपस्थित थे।

हरित सन्देश

वन-संदेश

वृक्षारोपण कीजिये, जन हित में संदेश।
जीवन सुखमय हो गया, साफ रखें परिवेश।।

वायु, अग्नि, जल जीव को, वसुन्धरा आकाश।
वृक्ष रूप भगवन का, पंच तत्व विश्वास।।

वृक्ष विकल्प विकास का, जीव-जंतु का हेत।
ध्वनि, जल, वायु संतुलन, जन जीवन को देत।।

वन संरक्षण कार्य में, मानवता का ज्ञान।
जगत जीव का पालना, वृक्ष मोल पहचान।।

पर्यावरण सहाय में, वृक्ष धरा परिवेश।
मिलकर वृक्ष लगाइये, मानव को सन्देश।।

वृक्ष रतन जन मूल है, औषधि अंग लगाये।
पर उपकारी वानिकी, जीवन सफल बनाये।।

वायु, अग्नि, जल संतुलन, नभ से वर्षा दान।
विश्व धरा पर्यावरण, वृक्ष रूप भगवान।।

जन्म-मरण की याद में, वृक्ष लगाए धाम।
जीवन के इतिहास में, अमर रहेंगे नाम।।

धरती कहे पुकार के, सुनिए मेरे भाव।
पड़ती वृक्ष लगाइये, होगा नहीं कटाव।

जीवामृत सूत्र

(1)

गईया गोबर दस किलो, आठ किलो गोमूत्र।
गुड़ बेसन दो-दो किलो, जीवामृत का सूत्र।।
जीवामृत का सूत्र, बरगद तले की माटी।
आधा किलो मिलाएं, घोल में रहे नाहिं गांठी।।
पानी ड्रम भराए, किलो दो सौ तक भइया।
जीवामृत तैयार, मथन कर रखना छइँया।।

(2)

जीवामृत घोल का, करे सभी प्रयोग।
उत्पादन अच्छा मिले, कम लागत उपयोग।।
कम लागत उपयोग, फसल के रोग मिटाएं।
पौध बने मजबूत, उपज में लाभ कमाएं।।
जैविक देना खाद, पौध हित बना है शरबत।
अपनाएं यह घोल, संजीवन जीवामृत।।

– राम सहाय यादव
(वनपाल)
उपकेन्द्र दतिया, वन अनुसंधान एवं
विस्तार, वृत्त ग्वालियर (म.प्र.)

अखबारों के आइनों से

भोपाल से सटकर पहाड़ियों पर रहता है बाघों का कुनबा, टेस्टिंग के लिए बेंगलूरू भेजे 192 सैंपल

एक्सक्लूसिव

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

विंध्य पहाड़ी से घिरा है भोपाल

तपोवन में डवलप हो रहा ईको पर्यटन सेंटर, तैयार की जा रही 80 हजार सेड बॉल्स

टूरिस्ट के लिए साइकिल ट्रैक तैयार, नेचर ट्रैकिंग से ले सकेंगे वाइल्डलाइफ का मजा

अब जंगल भी दिखेंगे हरे भरे

बच्चों के लिए तैयार गार्डन, लगाए झूले

ये नजर आएंगे

स्वाति पाठक

Pangolin smuggling racket busted

■ Our Correspondent
UMARIA, Feb 15

A SENSATIONAL case of smuggling of rare wildlife Pangolin has been cracked by Forest Department sleuths, in Harrawah village of Khitouli range of Bandhavgarh Forest Reserve.

The team of BTR carried out this operation in planned manner and along with the smugglers rescues two live pangolins, one from Harrawah village and one from Barhi of Katni district.

BTR officers received a tip-off from informers that smuggling of rare pangolin is being done by a gang with members from Umaria and some quack from Katni district. Forest sleuths received information that Dr Sufal Adhikari, Dr Lakhan Vishwas from village Bakeli and Dr Sunil Rai from Harrawah of Katni district lured local villagers for catching pangolin in return of hefty money. Then one Shankar Singh from Salkhania used to sell the rare pangolin in market at a very large amount. On the direction of Area Director, BTR, Mridul Pathak team comprising of Joint Dir... Anil Shukla, Deputy Director ... Mishra and Range Offi... Khitouli and Panpatha.

Range Officers posed as b...ers and struck a deal with Shank... Singh for purchasing a pango... He agreed to sell pangolin i... 20 lakh. When he finished deal, forest sleuth arrested smuggler. On the information accused, two live pangolins w... also recovered.

Team has arrested four acc... and presented them before ... Team has launched manhun... nab the remaining accused.

Senior officers are sure that ... gang has connection with in... national smugglers of pang... and smugglers from Uma... Katni, Dindori, Mandla, Balag... and others places are involved smuggling of pangolin.

Team is carrying out de... investigation to nab the ot... smugglers. This case is likely handed over to Spe... Investigation Team which w... look into the possibilities of ... gang working with national ... international level gang.

वन रक्षक नीतू ने अपनी शादी में किया कुछ ऐसा कि वन विभाग खुश, बाराती चकित

वन रक्षक दुल्हन की विदाई, बारातियों को गिफ्ट में दिए पौधे

जागरण शमशाबाद

वन विभाग में बतौर वन रक्षक नौकरी करने वाली शमशाबाद की एक युवती को पर्यावरण से इतना लगाव है कि उसकी शादी में बारातियों को बतौर उपहार उसने पौधे गिफ्ट किए गए।

शमशाबाद निवासी वन रक्षक नीतू साहू की बारात सिरोंज के पास शलरी गांव से आई थी। शादी रस्मों के बाद 12 मार्च को बारात की विदाई में 150 फलदार और फूलदार पौधे बारातियों को दिए गए। नीतू का वनों के प्रति लगाव जानकर यह पौधे वन विभाग ने खुद उपलब्ध कराए। तीन साल पहले नीतू की नौकरी वन रक्षक के रूप में ... थी।

विदिशा। बारातियों को पौधे भेंट करते हुए नीतू के परिजन।

सोचा था, ऐसा करूं समाज को मिले संदेश

नीतू ने बताया कि मेरी इच्छा थी कि मैं अपनी शादी में कुछ अलग करना चाहती थी। जिससे समाज को संदेश मिले। वन विभाग पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करना चाहता है। इसलिए 150 पौधे बारातियों को विदाई में बांटे। जिससे लोग प्रेरित हो सके।

'नीतू को मिला अपने पति का साथ'

नीतू के पति पवन शिक्षक ने कहा कि मैं मेरे जीवन साथी की इस पहल से बहुत खुश हूं। मैं अपने स्कूल में बच्चों को भी बताऊंगा कि हम सब मिलकर पर्यावरण को बचाएं। ताकि आने वाले समय में लोग भी पर्यावरण के प्रति जागरूक रहें।

विभाग भी नीतू के कार्य से है खुश

शमशाबाद वन विभाग ने वन कर्मी की इस पहल को खूब सराहा। वनपरिक्षेत्र अधिकारी ने बताया कि विदिशा जिले में ये पहला नवाचार है। बहुत खुशी हुई कि इसकी शुरुआत शमशाबाद में एक वनरक्षक के माध्यम से हुई। इससे हम सभी स्टाफ गर्व की अनुभूति कर रहे हैं।

वर्ल्ड पेंगोलिन डे: इसे बाघ-सिंह नहीं, इंसानों से खतरा ज्यादा

इसके शिकार पर रोक के लिए STF का गठन करने वाला पहला राज्य है एमपी

पेंगोलिन का नॉर्मल साइज : 60-70 सेमी. तक

इसे फ्रेंड ऑफ फार्मर कहा जाता है

सुपर मॉम : 25 को जन्म दे चुकी बाघिन 4 नए शावकों के साथ दिखी

सिवनी। नवदुनिया प्रतिनिधि

पेंच राष्ट्रीय उद्यान की मशहूर 'कॉलरवाली' बाघिन चार नए शावकों के साथ रविवार सुबह पहली बार नजर आई। उसने एक शावक को अपने जबड़े में दबाकर सड़क पार कराई। यह नज़ारा एक पर्यटक ने कैमरे में कैद कर लिया।

इकलौती बाघिन

सुपर मॉम नाम से प्रसिद्ध 'कॉलरवाली' बाघिन इससे पहले सात बार मां बन चुकी है और 25 शावकों को जन्म दे चुकी है। आठवीं बार इसने चार शावकों को जन्म दिया है। इस तरह यह बाघिन कुल 29 शावकों को जन्म दे चुकी है। इतने अधिक शावकों को जन्म देने का कीर्तिमान बनाने वाली यह इकलौती बाघिन मानी जा रही है। 14 साल की बाघिन के नए शावकों को जन्म देने को विशेषज्ञ शोध का विषय मान रहे हैं।

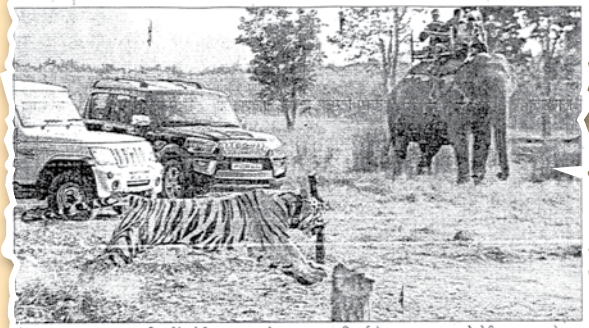

बोरी अभयारण्य में बाघों का कुनबा बढ़ाने कान्हा टाइगर रिजर्व से लाए नर बाघ

होशंगाबाद। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के बोरी अभयारण्य मे कान्हा टाइगर रिजर्व से लाए गए नर बाघ को बोरी अभयारण्य मे मुक्त किया गया। इस अवसर पर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के क्षेत्र संचालक एसके सिंह, सहित उपसंचालक वर्मा व अन्य अधिकारी कर्मचारी सहित चिकित्सक भी मौजूद रहे। बताया जा रहा है कि विस्थापन से रिक्त हुए वन क्षेत्र मे बाघों की संख्या में

इको टूरिज्म पार्क में आनंद के लिए अब आइडी जरूरी, छुट्टी का मजा ले रहे शहरवासी

पत्रिका फोटो स्टोरी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

...सुरक्षा और पारिवारिक माहौल बनाए रखने की दृष्टि से अब त्रिवेणी स्थित वन विभाग की रोपणी (इको टूरिज्म पार्क) में प्रवेश के लिए ...न परिचय पत्र अनिवार्य कर दिया ...या है। ऐसे में इको टूरिज्म पार्क में ...वेश के लिए 10 रुपए शुल्क के साथ ही आधार कार्ड, वोटर आइडी ...दि परिचय पत्र दिखाना होगा। ...रजिस्टर में आधार या वोटर आइडी ...के नंबर और फोन नंबर दर्ज

शहरवासियों को आनंद देने के लिए वन विभाग ने त्रिवेणी के नजदीक इको टूरिज्म पार्क विकसित किया है। चार-पांच महीने में यहां आने वालों की संख्या खासी बढ़ गई है। रविवार को बड़ी संख्या में का आनंद लेने पहुंचे। किसी ने यहां वृक्ष पर बंधे झूले का आनंद लिया तो किसी किसी ने परिवार के साथ डांस का मजा लिया। परिवार के अलावा दोस्तों के साथ आए युवाओं की भी खासी भीड़ रही। युवाओं में क्रेज रहा। वन विभाग के अधिकारी केके पंवार ने बताया, इको टूरिज्म पार्क शहरवासियों को खासा लुभा रहा है इसलिए यहां जनसुविधाएं बढ़ाई जा रही हैं। हाल में यहां कैंटीन सुविधा भी शुरू की गई है। सुरक्षा के...

राष्ट्रीय हिन्दी मेल

वनवासी युवाओं को मिला रोजगार

छिंदवाड़ा। कौशल उन्नयन के तहत वन विभाग द्वारा वनवासी बच्चों को रोजगार मुहैया करवाने के लिए उद्देश्य से प्रशिक्षण दिलवाया जाता है। पिछले एक माह से जारी प्रशिक्षण के बाद एल एंड टी कंपनी से जिले के 36 से अधिक वनवासी युवाओं का चयन किया और उन्हें एडवांस प्रशिक्षण के लिए हैदराबाद बुलाया गया। जहां गुरुवार को डीएफओ ने युवाओं को हैदराबाद के लिए रवाना किया। छिंदवाड़ा वन वृत्त के वनाधिकारियों द्वारा वन वासियों के बच्चों को रोजगार मुहैया करवाने का लगातार प्रयास किया जा रहा है।

Forest Department starts campaign to save peacock

■ Staff Reporter

MADHYA Pradesh Forest Department is all set to start a special campaign to save peacocks from poaching throughout State. MP Forest Department has formed a flying squad team to start the campaign in several parts of state.

All the informers of forest department in jungle areas have been informed about the campaign. Forest officials said that peacocks are being poached on large scale from Madhya Pradesh. Till now more than 200 peacocks have been poached alone from Bhopal jungles.

Concerned over the issue, forest department has decided to start the campaign.

Through this campaign, officials will bust several places and catch the poachers and ...

Recently, flying squad ...

Forest Department held four poachers with ... peacock meat in a hostel.

Flying squad team incharge V K Dubey said that hostels situated in old city have been marked ... such activities ... poachers will be held.

अनुभूति कैंप में छात्रों को मि... औषधीय पौधों की जानकारी

भास्कर न्यूज | कटनी

Ficus land coming up at Badgonda nursery

Times News Network

Indore: One acre land at Mhow's Badgonda nursery is now earmarked as 'Ficus Land' where 23 varieties of ficus plants are being grown. A study has also been sanctioned by forest department into variety of ficus plants in Madhya Pradesh.

Among the widely known varieties of ficus are peepal, pakar, goolar, banyan, rubber plant etc. Among some of the lesser known ficus trees are bodhi tree, kala umbar, soft fig, Krishna vat etc. The forest department officials ...

23 varieties of ficus plants are being grown at the nursery

which were available in Madhya Pradesh ... ve of Madhya Pradesh.

collected by forest department officials at Badgonda nursery in Mhow, where the area designated to these plants has been named 'ficus land'.

The project of developing the park and conducting a study into it is monitored by the CCF Indore and study will help people become aware of this species of plants which are very important- both environmentally and culturally," APCCF (research and extension) PC Dubey said.

The data regarding the variety of ficuses was collec...

the names of districts were listed where ficus varieties were seen. The forest officials- to collect seeds and samples of trees- had to match photographs of trees with trees in the region to locate the exact spot within the district where the variety was found.

The study at ficus land will include research and analysis of flowering, fruiting, bird habitat and growth of these trees in the weather here. While each of the ficus varieties grow in different terrain and habitats, the plants are being grown in In...

ब्रजमोहन रामकली गौसंरक्षण केंद्र द्वारा रियायती दर पर उपलब्ध कराई जाती है गोबर से बने कंडे की लकड़ियां

गोबर से बनीं लकड़ियों से हर माह कटने से बचा रहे 15 पेड़

पर्यावरण बचाने की पहल

शहर में कम हो रही हरियाली को बचाने की इस मुहिम से पेड़ों को मिल रहा नया जीवन।

प्रवीण सावरकर
patrika.com

भोपाल . एक ओर हरे भरे पेड़ काटकर पर्यावरण को नुकसान पहुंचाया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर कुछ संस्थाएं ऐसी भी हैं, जो पर्यावरण बचाने के लिए नए विकल्प खोज रही हैं। ऐसी ही पहल कुछ माह पहले ब्रजमोहन रामकली गौसंरक्षण केंद्र ने की है। इस केंद्र द्वारा गाय के गोबर से लकड़ी बनाने वाली एक मशीन लगाई गई है। यह लकड़ियां शहर के विश्रामघाटों पर शव के अंतिम संस्कार के लिए इस्तेमाल की जाती है।' शहर के विश्रामघाटों को यह केंद्र रियायती दर पर लकड़ियां उपलब्ध करा रहा है। इस केंद्र में एक मशीन है, जिससे रोजाना ढाई क्विंटल लकड़ियां बनाई जाती हैं। पदाधिकारियों का कहना है कि इसके जरिए हम हर माह तकरीबन 15 पेड़ों को कटने से बचा रहे हैं और विश्रामघाट भी हमसे लकड़ियां खरीद रहा है। लकड़ियां 600 रुपए क्विंटल के हिसाब से उपलब्ध कराई जा रही है।

अनुदान के बजाय उपलब्ध कराएं मशीन

ब्रजमोहन रामकली गौसंरक्षण केंद्र के प्रमोद नेमा ने बताया कि गाय के गोबर से बनी लकड़ियां पेड़ों को बचाने का एक बेहतर विकल्प है। शहर में इसकी डिमांड भी अधिक है। हम इस संबंध में शीघ्र ही शासन से मांग करेंगे कि शासन जिन गौशालाओं को अनुदान देती है, उन्हें अनुदान के बजाए अगर इस तरह की मशीन उपलब्ध कराए तो गाय के गोबर का सही इस्तेमाल होगा, पेड़ बचेंगे और गौशालाओं की आमदनी भी बढ़ेगी।

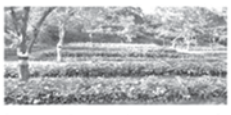

इधर, रोजाना काटे जा रहे 20 पेड़

पेड़ बचेंगे तो जीवन बचे...

शहर को आधुनिक बनाने के ना... पर पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की ... रही है जो शहर के लिए घातक ...

राजधानी की हरियाली को लेकर ये चिंता की बात है। बीते एक साल के दौरान शहर में प्रतिमाह 600 पेड़-पौधों के औसत से हरियाली खत्म की गई है। हैरत ये है कि इसके लिए कहीं से कोई अनुमति नहीं ली गई। नगर निगम के ही इंटरनल सर्वे में ये तथ्य सामने आया है। यानि प्रतिदिन शहर में बिना अनुमति 20 पेड़ काट रहा है। इसमें बड़े से लेकर छोटे पेड़-पौधे भी शामिल हैं। हाल में लिंक ...

...लेकर नूतन कॉलेज के सामने तक पूरी हरियाली जिसमें एक से तीन स... तक के पेड़-पौधे थे काट दिए गए। इ... संख्या 600 से अधिक थी। ये स्मार्ट... डेवलपमेंट कारपोरेशन ने क्षेत्र विकास के नाम पर काटे। हालिया मामला ... विभाग की वनिता रोपणी में बिना अनुमति पेड़ काटने का सामने आया ... जिसपर निगम ने सिर्फ नोटिस जारी क... जिम्मेदारी पूरी कर ली। यहां भी दस...

ग्वालियर देगा देश को काला शीशम

विलुप्त हो चुकीं 14 प्रजातियो की पौध तैयार कर रहा वन विभाग

कैंसर, हार्ट, डायबिटीज सहित कई गंभीर बीमारियों में इलाज में काम आने वाला शीशम, करघई, सलई जैसे 14 प्रजाति के विलुप्त पौधे वन विभाग ग्वालियर स्थित अपनी नर्सरी में तैयार कर रहा है।

डीबी स्टार, ग्वालियर

इंटरनेशनल यूनियन कंजर्वेशन ऑफ नेचर एंड नेचुरल रिसोर्सेस (आईयूसीएन) की रिपोर्ट के आधार पर प्रदेश में 40 प्रजाति के पौधो को रेयर (दुर्लभ), इंडेंजर्ड (खतरे में) और थ्रिएटन (खतरे की कगार पर) श्रेणी में रखा गया है। इनमें से 14 प्रजाति के पौधों को बचाने के लिए वन अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त ग्वालियर कार्य कर रहा है। यहां खैर, करधई, गुग्गुल जैसी प्रजातियां जिनका पुनरुत्पादन प्रतिशत कम है, उन्हें संरक्षण के साथ-साथ नर्सरी में कैसे तैयार किया जाए, इस पर रिसर्च चल रही है।

यह हैं मुख्य पौधे

- शीशम (डलबर्जिया लेटिफोलिया) फर्नीचर निर्माण एवं कैंसर रोग के उपचार के लिए।
- हर्रा एवं बहेड़ा (पाचन हेतु, त्रिफला के मुख्य घटक)।
- कुल्लू (इस पौधे से गोंद निकलती है)।
- सलई (गोंद, दर्द निवारक औषधियो मे उपयोगी)।
- खिरनी (मांसपेशी एवं कंकाल तंत्र में)।
- गुग्गुल (देव धूप, कामोद्दीपक)।
- करघई (छाल व गोंद हृदय रोग मे उपयोगी)।
- बीजा एवं हल्दू।

इन पौधो को बीज एवं कटिंग दोनो प्रकार से तैयार किया जा रहा है।

कर रहे हैं संरक्षण

स्वाति पाठक, वन विस्तार अधिकारी अनुसंधान एवं विस्तार केंद

हम आरईटी के तहत आने वाले पौधो के संरक्षण के लिए कार्य कर रहे हैं। इसके संरक्षण के लिए रिसर्च कार्य भी चल रहा है। आने वाले कुछ वर्षों में इस पौधो की प्रजातियां फिर से दिखेंगी।

Forest dept likely to clone endangered & rare trees in new lab

Times News Network

Indore: After successfully developing bamboo plants through tissue culture, forest department's research and extension nursery at Khandwa road is now experimenting on developing rare and endangered trees (RET) species through tissue culture at their newly opened tissue culture lab. As an experiment, team at Indore is developing clones of good quality Sagon trees and also Kadam and Paadar varieties. For cloning and tissue culture of Sagon trees, branches of trees that are fittest have been procured from Dewas district's Sita Samadhi beat. The trees which are tall, straight, have wide girth of stem and are healthy had been shortlisted by forest department earlier and the branches of these trees were chosen to be cloned through tissue culture. Similar process is adopted for Kadam and Paadar varieties whose branches are taken

her centre for further multiplication," CCF (research and extension) Manoj Argal said.

The process was initiated by the team in February. Now, tree buds have been put in culture mediums for growth. Such an experiment is conducted for the first time in Madhya Pradesh. The tissue culture lab in Indore has successfully developed one lakh bamboo plants since 2007 and cloning of RET species is being done at experimental and research basis, without any fixed target.

"The tissue culture technique of trees based on clumps has low success rate due to contamination. However, we ...

मारो इस जंगली जानवर को गांव मे घुस आया है।
अरे! ठीक से देखो तुम्हारा गांव मेरे जंगल में घुस आया है।
Rohit

नेवले के बालों से बना ये ब्रश तो कमाल का है भाई पेंटिंग मे जान आ गई है।
मेरी माँ को मारकर बनाया ये ब्रश, क्या मेरी माँ मे फिर से जान डाल सकता है ?
Rohit

वनों का विनाश रोकें इन्हें आग से बचाएँ

वनो में आग लगने के कारण

- किसानों द्वारा फसलों के अवशेष को जलाने के लिए लगाई गई आग का अन्य क्षेत्रों में फैलना।
- जंगलों में से गुजरते समय जली हुई बीड़ी सिगरेट के टुकड़े फेकने से।
- कुछ लोगों द्वारा भूमि पर अवैध कब्जा करने की नीयत से लगाई गई आग।
- शरारती तत्वों द्वारा जानबूझकर लगाई गई आग।
- चरवाहों द्वारा लापरवाही से जलाई गई आग।
- अवैध कटान को छिपाने के लिए लगाई गई आग।
- आपसी रंजिस में लगाई गई आग।
- अवैध शिकार की नियत से वन्य जन्तुओं को भगाने के लिए लगाई गई आग।

सावधानियां एवं उपाय

- किशान फसलों के अवशेष खेतों में न जलाए बल्कि हैरों करके उनको खेतों में दबायें।
- यदि कोई व्यक्ति आग लगाने की कोशिश करता है तो उसे समझाएं।
- यदि आप वन में या वन के निकट आग लगी देखें तो हरी टहनियों से पीटकर आग बुझाये निकटतम पुलिस चौकी या वन चौकी पर सुचना देवें।
- अनजाने में सुलगती बीड़ी, सिगरेट और माचिस की तीली वन क्षेत्र में न फेकें। कभी भी अच्छी घास के लिए जंगल में आग न लगाए। समय रहते हुए फायर लाइन बनाकर या फायर लाइन की सफाई करें।
- समान्य जान को शिक्षित करें व उनका विश्वास जीतें।
- वन समितियों व ग्राम सभाओं के सहयोग से आग लगने के कारणों पर रोक लगाएं।

अमरावत रोपणी, भोपाल वृत्त

Published by :- APCCF (R/E) on behalf of MP Forest Department.
Printed by :- Super Printers & Plastics Works on behalf of Madhya Pradesh Madhyam.
Printed at :- Super Printers & Plastics Works, Plot No. 22 Nadeem House, Press Complex Zone 1 MP Nagar, Bhopal.
Published at Room No. 140, Prachar Prasar Prakosth, Satpura Bhawan, Bhopal, M.P.
Email :- pracharprasarprakosth@mp.gov.in, Contact No. 0755-2524293, Editor :- Dr. P.C. Dubey, APCCF (R/E)